04 - जन सैलाब क्या बसपा के ताकत की पुनर्वापसी है?

05 - मुस्कुराता हूँ और शुक्रिया अदा करता हूँ

06 - इतिहास के ज्ञान से ही विषम परिस्थिति में हम अपनी भूमिका का निर्वहन...

07 - दिव्यांग को बीपीएल कार्ड जारी हुआ

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 11 अक्टूबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 43, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

बिहार चुनाव: किसकी पूरी होगी आस, किसकी टूटेगी उम्मीद

उमेश चतुर्वेदी

हर बार की तरह बिहार विधानसभा का मौजूदा चुनाव उन सभी लोगों के लिए उम्मीदें लेकर आया है, जो खुद चुनाव मैदान में उतरने जा रहे हैं.. उनके समर्थकों की भी उनकी कामयाबी से आस लगी है। कार्यकर्ताओं का बड़ा वर्ग ऐसा भी है, जिसकी सेहत उस दल की जीत या हार पर निर्भर करती है, जिससे उसकी प्रतिबद्धता जुड़ी होती है। लेकिन सबसे ज्यादा उम्मीद पहली बार खुद चुनावी मैदान में उतरने जा रहे प्रशांत किशोर को है। उम्मीद तो तेजस्वी यादव को भी है। उन्हें लगता है कि इस बार उनके नाम के बाद अतीत में लगे उप विशेषण से मुक्ति मिल जाएगी। उम्मीद उस बीजेपी को भी है, जो अपने सहयोगी की तुलना में संख्या बल में ताकवतर होने के बावजूद छोटे भाई की भूमिका निभाने को मजबूर रही है। आस तेजप्रताप को भी है कि वे लालू-राबड़ी की छाया से दूर होने के बावजूद चुनावी मैदान में कमाल दिखाने में वे सफल रहे हैं। देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस को भी ऐसी ही उम्मीदें हैं। उसे भावी सरकार में हिस्सेदारी की आस है। लेकिन अन्य दलों की तुलना में उसकी उम्मीद कुछ अलग भी है। उसे लगता है कि अगर इस चुनाव में तेजस्वी की अगुआई वाले उसके गठबंधन ने मोदी-नीतीश की जोड़ी को पटखनी दे दी तो दिल्ली के ताज तक की उसकी यात्रा आसान हो जाएगी।

उम्मीदें खोखली नहीं होतीं। तेजस्वी यादव को लगता है कि उनके गठबंधन में शामिल कांग्रेस के चलते उनके पारंपरिक मुस्लिम-यादव गठजोड़ को राज्य के सवर्ण तबके के एक वर्ग का वोट मिल सकता है। पिछले चुनाव में उनका गठबंधन नीतीश की अगुआई वाले गठबंधन की तुलना में महज साढ़े सोलह हजार के करीब वोटों से ही पिछड़ गया था। उन्हें लगता है कि इस बार इस कमी को ना सिर्फ उनका गठबंधन पूरा कर लेगा,बल्कि आगे भी निकल जाएगा। लेकिन उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि पिछली बार चिराग पासवान की अगुआई वाली लोक जनशक्ति पार्टी एनडीए से अलग होकर लड़ रही थी। तब उनका अघोषित और घोषित-दोनों उद्देश्य नीतीश कुमार को पटखनी देना था। इसमें वे पूरी तरह कामयाब तो नहीं हुए, अलबत्ता नीतीश के नतीजों को नुकसान पहुंचाने में कामयाब रहे। नीतीश की पार्टी को महज 43 सीटों से संतोष करना पड़ा था। लेकिन इस बार चिराग नीतीश के साथ हैं। अंदरखाने में भले ही वे नीतीश का साथ नहीं दे रहे हों, लेकिन करीब दस फीसद पासवान वोटरों का आधार एनडीए को मुहैया करा रहे हैं। इसलिए तेजस्वी को इस बार कहीं ज्यादा मेहनत करनी होगी। उन्हें राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के ठोस वोट बैंक में गहरी सेंध लगानी होगी। तेजस्वी के लिए राहत की बात यह है कि सीमांचल की 28 सीटों पर उन्हें चुनौती देने वाली एआईएम इस बार उनसे गठबंधन करने के लिए लालायित है। अगर बात बन जाती है तो तेजस्वी के गठबंधन के लिए चुनावी वैतरणी थोड़ी आसान हो जाएगी। लेकिन तेजस्वी की राह का एक बड़ा रोड़ा उनके बड़े भाई तेजप्रताप हैं। जिन्हें उनकी दो बहनों का परोक्ष साथ भी मिल रहा है। इससे बिहार के उनके कोर वोटरों में संदेश गया है कि परिवार में सबकुछ ठीक नहीं है। रही बात नीतीश कुमार की तो इस बार का चुनाव एक तरह से उनका आखिरी चुनाव है। हालांकि पिछली बार यानी 2020 में जब वे चुनावी चक्रव्यूह में फंसे नजर आ रहे थे तो उन्होंने कुछ सभाओं में पिछले ही चुनाव को आखिरी बता दिया था। राजनीतिक दुनिया में यह भी माना जा रहा है कि इस बार वे बीजेपी से यह गारंटी चाहेंगे कि उनके बेटे निशांत का नेतृत्व स्थापित हो जाए। इस बार के चुनाव में जनता दल यू एकजुट तो दिखेगा, लेकिन चुनाव मैदान में सबसे ज्यादा सवालों का सामना अशोक चौधरी को करना होगा। जिनके भ्रष्टाचार की गाथा को प्रशांत किशोर लोकमानस के बीच पहुंचा चुके हैं। उनकी ही तर्ज पर बीजेपी की ओर से उप मुख्यमंत्री बने मुरेठाधारी सम्राट चौधरी के लिए भी खुद का बचाव करना मुश्किल होगा, जिनके शैक्षिक प्रमाण पत्र और हत्या के एक आरोप में बरी होने को प्रशांत किशोर ने बिहार का सवाल बनाकर रख दिया है।

बीजेपी इस बार चाहती है कि वह राज्य में बड़े भाई की भूमिका में रहे। लेकिन बिहार में अब भी वह खुद के दम पर अपना वजूद स्थापित करने से दूर है। इसके लिए उसने अपने दो बड़े कद्दावर रणनीतिकारों धर्मेंद्र प्रधान और विनोद तावड़े को मैदान में उतार दिया है। दोनों ने बिहार में अपने ढंग से ऑपरेशन शुरू कर दिया है। मैथिली की लोक गायिका मैथिली ठाकुर को बीजेपी एक तरह से अपना उम्मीदवार घोषित कर ही चुकी है। वैचारिक रूप से विरोधी रहे लोगों को भी अपने पाले में लाने में उसे गुरेज नहीं रहा। बशर्ते कि उनके आने से पार्टी को दूरगामी राजनीतिक फायदा मिलता दिख रहा हो। बीजेपी को उम्मीद अपने मजबूत रणनीतिक वोट बैंक पर है। अति पिछड़ों और सवर्ण तबके में उसकी पकड़ अच्छी है। हालांकि हाल के दिनों में बीजेपी की ओर से पिछड़ावादी राजनीति को बढ़ावा देने और उसी समुदाय से नेतृत्व उभारने के चलते सवर्ण तबके का एक वर्ग नीतीश-बीजेपी जोड़ी से नाखुश भी है। लेकिन यह भी तय है कि जैसे इस वर्ग को लगेगा कि राष्ट्रीय जनता दल की अगुआई वाला गठबंधन जीत रहा है, एकजुट होकर बीजेपी-नीतीश गठबंधन को टूटकर वोट डालेगा। मुसहर और अति दलित जातियां बीजेपी के साथ नजर आ रही हैं। बिहार की राजनीति में कोईरी-कुर्मी की जोड़ी को लवकुश कहा जाता रहा है। नीतीश बेशक अपनी बिरादरी कुर्मी के ही नेता नहीं माने जाते, लेकिन कुर्मी समुदाय उन्हें ही अपना नेता मानता है। कुशवाहा यानी कोईरी वर्ग के नेता उपेंद्र कुशवाहा इसी गठबंधन में हैं। चिराग भी मजबूती के साथ खड़े हैं। बीजेपी की अगुआई वाले गठबंधन के लिए यह जातीय मसाला बड़ी काम की चीज है।

इस बीच कई लोगों की उम्मीद की किरण प्रशांत किशोर बनकर उभरे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि उन्हें सिर्फ सवर्ण तबके के युवाओं का समर्थन हासिल है। अपना आकलन है कि प्रशांत किशोर बिहार की राजनीति में सेंध लगाने में कामयाब रहेंगे, लेकिन सरकार बनाने के जादुई आंकड़े को छू पाना उनके लिए कठिन रहने वाला है। लेकिन उपेंद्र कुशवाहा को लेकर उनके समर्थकों को आस थी कि जल्द ही वे केंद्रीय मंत्रिमंडल में स्थान बना पाने में कामयाब रहेंगे। लेकिन चुनावों की घोषणा के साथ ऐसा होना संभव नहीं रहा।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हाथ मलते रह गए ट्रंप, मारिया बन गईं विनर

● वेनेजुएला की विपक्षी नेता को मिला शांति का नोबेल ● 20 साल से वेनेजुएला में लोकतंत्र के लिए लड़ रहीं

ओस्लो (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को शांति का नोबेल पुरस्कार नहीं मिला है। डोनाल्ड ट्रंप बार बार नोबेल पुरस्कार के लिए अपनी दावेदारी पेश कर रहे थे। वो 'सात युद्ध' में शांति करवाने का दावा करते आ रहे थे। लेकिन बावजूद इसके उन्हें शांति का नोबेल पुरस्कार नहीं दिया गया है। डोनाल्ड ट्रंप के लिए ये बहुत बड़ा झटका है, क्योंकि नोबेल पुरस्कार के लिए उन्होंने अपने दूसरे कार्यकाल में क्या नहीं किया है, उन्होंने हर युद्ध में खुद को शांति करवाने वाला मसीहा बताया है। उन्होंने भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी शांति करवाने के लिए मध्यस्थता करने का दावा किया था, जिसे भारत ने सिरे से खारिज कर दिया था।

वेनेजुएला की लोकतंत्र समर्थक नेता को नोबेल

नोबेल शांति पुरस्कार 2025 इस बार वेनेजुएला की लोकतंत्र समर्थक नेता मारिया कोरिना मचाडो को दिया गया है। नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने कहा कि यह सम्मान उन्हें वेनेजुएला के लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए उनके 'अथक संघर्ष' और देश को तानाशाही से लोकतंत्र की ओर ले जाने के प्रयासों के लिए दिया गया है।

अब तक कफ सिरप से 24 बच्चे की जानें जा चुकीं

आरोपी रंगनाथन को परासिया लाई एसआईटी, कोर्ट में हमले की कोशिश

वकीलों ने कहा-हत्यारे को फांसी दो, आरोपी 10 दिन की रिमांड पर

भोपाल/छिंदवाड़ा (नप्र)। जहरीले कफ सिरप से मौत के मामले के आरोपी गोविंदन रंगनाथन को परासिया कोर्ट में पेश किया। इस दौरान उन पर हमले की कोशिश की। लोगों और वकीलों ने हत्यारे को फांसी देने की मांग की। रंगनाथन की कंपनी श्रीसन फार्मास्युटिकल में बना कप सिरप पीने से छिंदवाड़ा, बैतूल और पांढुर्णा में अब तक 24 बच्चों की मौत हो चुकी है। उधर, सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सीबीआई या न्यायिक जांच की मांग खारिज कर दी है।

आरोपी रंगनाथन को प्रथम श्रेणी न्यायाधीश शैलेंद्र उइके की कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने उन्हें 10 दिन की रिमांड पर सौंपा है। जहरीले कफ सिरप से मौत मामले के आरोपी गोविंदन रंगनाथन को अब से कुछ देर बाद परासिया कोर्ट में पेश किया। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा विशेष जांच दल (एसआईटी) शुक्रवार सुबह 11 बजे रंगनाथन को लेकर परासिया पहुंचा था।

परासिया कोर्ट के बाहर भीड़ थी, पुलिस की सख्त सुरक्षा- एसआईटी रंगनाथन को परासिया कोर्ट लेकर पहुंचने वाली थी। कोर्ट परिसर के बाहर भीड़ लगी हुई थी। किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए भारी संख्या में पुलिस बल भी मौजूद है। परासिया अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष ने कहा- न रंगनाथन की पैरवी करेंगे, न करने देंगे।

हो गया फैसला! काबुल में दूतावास खोलेगा भारत

अफगानिस्तान ने भी दिया एक भरोसा, बन गई बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी भारत के ऐतिहासिक दौरे पर हैं। शुक्रवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर और मुत्तकी के बीच बेहद अहम बातचीत हुई। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अफगानिस्तान की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और स्वतंत्रता के लिए भारत पूरी तरह प्रतिबद्धता जताते हुए कहा कि भारत जल्द ही काबुल में अपना दूतावास खोलेगा। बता दें कि चार साल पहल अशरफ गनी के अफगानिस्तान से भागने और तालिबान के कब्जे के बाद भारत ने अपना दूतावास काबुल में बंद कर दिया था। गौरतलब है कि इस वक्त अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच भी संबंध तनावपूर्ण हैं। ऐसे में भारत और अफगानिस्तान की निकटता पाकिस्तान के लिए बड़ी चुनौती बनी हुई है। मुत्ताकी ने खुलकर स्वीकार किया है कि भारत हमेशा अफगान लोगों के साथ खड़ा रहा है और कई क्षेत्रों में उनकी सहायता की है। अफगानी विदेश मंत्री ने भी आश्वासन दिया है कि वह भारत के साथ हैं।

जयशंकर बोले-

अफगानिस्तान के विकास में भारत की रुचि- जयशंकर ने कहा कि भारत को अफगानिस्तान के विकास में गहरी रुचि है। उन्होंने आतंकवाद से निपटने निपटने के लिए किए जा रहे साझा कोशिशों की भी तारीफ की। उन्होंने मुत्ताकी से कहा कि हम भारत की सुरक्षा के प्रति आपकी संवेदनशीलता की सराहना करते हैं, पहलगाम आतंकी हमले के दौरान आपने जो समर्थन दिया, वह काबिलेतारीफ था। जयशंकर ने कहा, भारत, अफगानिस्तान की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और स्वतंत्रता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। इसे और मजबूत करने के लिए ही, मैं आज भारत के तकनीकी मिशन को भारतीय दूतावास के दर्जे तक बढ़ाने की घोषणा कर रहा हूं। मुत्तकी ने भारत को शुक्रिया कहते हुए कहा कि अफगानिस्तान में आए भूकंप में भारत सबसे पहले मदद पहुंचाने वाला देश था।

देश की सबसे अमीर महिला बनीं सावित्री जिंदल

हिसार (एजेंसी)। फोर्ब्स इंडिया की रिच लिस्ट 2025 में हरियाणा की हिसार की विधायक और ओपी जिंदल समूह की प्रमुख सावित्री जिंदल भारत की सबसे अमीर महिला बन गई हैं। 39.6 बिलियन डॉलर की कुल संपत्ति के साथ, उन्होंने मुकेश अंबानी और गौतम अडाणी के बाद भारत के सबसे धनी लोगों में तीसरा स्थान हासिल कर लिया है। गुरुवार (9 अक्टूबर) को ही यह लिस्ट जारी हुई है। अब दुनिया के सबसे अमीर लोगों में सावित्री जिंदल का 48वां स्थान है। इससे पहले अप्रैल में फोर्ब्स बिलियनेयर (मानक के अनुसार जिसकी कुल संपत्ति कम से कम 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर यानि 8,300 करोड़ रुपए या उससे अधिक हो) लिस्ट 2025 की सूची जारी हुई थी। उस समय सावित्री जिंदल की कुल संपत्ति 35.5 बिलियन डॉलर थी।

समाज के सहयोग और सामाजिक संस्थाओं की सक्रियता से संभव हुए हैं सामुदायिक महत्व के कई कार्य : मुख्यमंत्री

सरस्वती विद्या मंदिर द्वारा की जा रही पहल सराहनीय, संघ शताब्दी सभागार का हुआ लोकार्पण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि समाजिक संस्थाएं समाज के सहयोग से सामुदायिक महत्व के कार्यों का संपादन और अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती हैं। समाज के सहयोग से कई स्थानों पर मंदिर, शालाओं और अन्य सामुदायिक महत्व के भवनों का निर्माण और अन्य महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुए हैं। सरस्वती विद्या मंदिर द्वारा इस दिशा में की जा रही पहल और जनसामान्य द्वारा इसके लिए दिया जा रहा सहयोग सराहनीय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को रतलाम के काटजू नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर परिसर में नव निर्मित 'संघ शताब्दी सभागार' का लोकार्पण करने के बाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुनिया में कई देश सैन्य और आर्थिक रूप से मजबूत है, लेकिन भारत दुनिया का इकलौता देश है, जहां सनातन संस्कृति से समाज चल रहा है। हम शक्ति में विश्वास न करते हुए संस्कारों में

विश्वास करते हैं और सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव के साथ चलते हैं। भारत हजारों सालों से विश्व गुरू रहा है हमने तक्षशिला, नालंदा, विक्रमादित्य विश्वविद्यालयों के माध्यम से दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई थी। दुनिया के कई देशों के लोग सुशासन की स्थापना के लिए अपने देश के नागरिकों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत भेजते थे। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री श्री चेतन्य काश्यप ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन के आधुनिक विश्वकर्मा हैं। उनके नवाचार और विकास के कार्य आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। उनके मार्गदर्शन में प्रदेश में नई शिक्षा नीति का क्रियान्वयन हुआ है, हमें इसे विस्तार देना है।

सुप्रभात

अभिनेता बार-बार सोचता है
खुद को धिक्कारता है

कि लोगबाग समझ लेते हैं
सुधार भी लेते हैं अपने तईं
लेकिन देहभाषा पर लगी ग़लत वर्तनी
भाषा ही बदल देती है समाज की

कि जब ईज़ाद नहीं हुई थी कोई भाषा
वर्तनी छोड़िए
कहाँ ही थी वर्णमाला

जो कहती थी
देहभाषा ही कहती थी
और चलता रहा दुनिया का कारोबार...।

-वसंत सकरगाए

भारतीयों को एक और झटका देने की तैयारी

● एच-1बी वीजा नियमों में और बदलाव करेंगे ट्रंप

वॉशिंगटन (एजेंसी)। एच-1बी वीजा की फीस 1 लाख डॉलर किए जाने के बाद डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन अब कुछ और कदम उठाने की तैयारी में है। फीस में इजाफे का अर्थ है कि किसी भारतीय को यदि अमेरिका में नौकरी के लिए एच-1बी वीजा लेना है तो 80 लाख रुपये की कीमत चुकानी होगी। इस वीजा का लाभ उठाने वाले लोगों में भारत, चीन जैसे देशों के लोग बहुतायत में हैं। कहा जाता है कि करीब 70 फीसदी तो भारतीय ही हैं, जो इस वीजा का लाभ लेते रहे हैं। ऐसे में सबसे बड़ा झटका भी भारतीयों को ही लगेगा। इस बीच खबर है कि डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन कुछ और सख्तियां भी लगा सकता है। इसके तहत कुछ अतिरिक्त नियम भी बनाए जा सकते हैं कि कौन एच-1बी वीजा का फायदा उठा सकेगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 11 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब जोरहाट बनेगा भारतीयों के लिए सबसे पसंदीदा स्थल

2026 में बर्लिन और लंगकावी को पछाड़कर हासिल करेगा मुकाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम का सुंदर शहर जोरहाट 2026 के लिए भारतीय यात्रियों की सबसे लोकप्रिय गंतव्य (ट्रेंडिंग डेस्टीनेशन) बन जाएगा। स्काईस्कैनर के नवीनतम ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्ट के अनुसार, जोरहाट ने बर्लिन, लैंगकावी और फुकेट जैसे अंतरराष्ट्रीय स्थलों को पछाड़कर यह शीर्ष स्थान हासिल करेगा। रिपोर्ट के अनुसार, 59 प्रतिशत भारतीय अगले वर्ष अधिक यात्रा करने की योजना बना रहे हैं। बुधवार को जारी की गई वार्षिक रिपोर्ट भारतीय यात्रियों की बदलती प्राथमिकताओं, मुख्य प्रेरणाओं और 2026 के लिए ट्रेंडिंग और

सबसे वेल्यूफुल डेस्टीनेशन्स की जानकारी प्रदान करती है। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि चाय बागानों और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध जोरहाट ट्रेंडिंग डेस्टिनेशन्स में शीर्ष पर है। इसके खोज में 493 प्रतिशत की आश्चर्यजनक वृद्धि देखी गई। इसके बाद श्रीलंका का जैफना (325 प्रतिशत) और ओमान का मस्कट (211 प्रतिशत) स्थान प्राप्त हुए है। इस अवसर पर भारत के टी 20 कप्तान और स्काईस्कैनर ब्रांड एंबेसडर सूर्यकुमार यादव भी मौजूद थे।

रिपोर्ट में अन्य उभरते हुए पर्यटन स्थलों में न्यूजीलैंड का क्वीनस्टाउन, थाईलैंड का चियांग राय और सऊदी अरब का अल-उला शामिल हैं।

10 साल में दलित-आदिवासियों का जीना हो गया है मुश्किल

● दलितों पर 46,आदिवासियों पर 91 फीसदी अपराध बढ़े

खरगे का बड़ा वार,कहा-पीएम मोदी ने आंखें बंद कर लीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने देश में दलितों और आदिवासियों के खिलाफ बढ़ते हमले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। खरगे ने कहा कि देश में दलितों के खिलाफ अपराधों में 46 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है, वहीं आदिवासियों के खिलाफ यह आंकड़ा 91 फीसदी है। उन्होंने कहा कि यह सरकार के राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो

2013 से 2023 के बीच का है। खरगे ने × पर लिखा, एनसीईआरबी की रिपोर्ट के अनुसार 2013 से 2023 के बीच देश में दलितों के खिलाफ अपराधों में 46 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वहीं आदिवासियों के खिलाफ अपराध में 91 फीसदी वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा, हरियाणा में आईपीएस अधिकारी से भेदभाव, हरिओम वाल्मीकि की प्रताड़ना, सीजेआई पर हमला भाजपाई सोच को उजागर करता है।

बिहार में एनडीए सहयोगियों के बीच बन गई बात

● चिराग पासवान 25 सीट पर राजी ,मांझी भी हैं तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के लिए सीट बंटवारे पर एनडीए में बड़ी सहमति बनती दिख रही है। पिछले कुछ दिनों से खबरें थीं कि चिराग पासवान अड़े हुए हैं और 40 विधानसभा सीटों से कम पर राजी नहीं हैं। अब सूत्रों के हवाले से दावा किया जा रहा है कि वह 25 सीट पर सहमत हो सकते हैं। इसकी एवज में उन्हें भाजपा से केंद्र से लेकर बिहार सरकार तक में ज्यादा महत्व और मंत्रालय दिए जाने का भरोसा मिला है। इसके अलावा उनकी पार्टी को एक राज्यसभा सीट भी ऑफर की जा सकती है। भाजपा की ओर से मिले

इस भरोसे के बाद चिराग पासवान 25 सीटें लड़ने पर ही राजी हो सकते हैं। इसके संकेत चिराग पासवान के बयान से भी मिल रहे हैं। चिराग पासवान का कहना है कि एनडीए में सब ऑल इज वेल है और जल्दी ही सीट बंटवारे को लेकर ऐलान हो जाएगा। फिलहाल किसी भी पक्ष की ओर से आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा जा रहा है, लेकिन यह माना जा रहा है कि 25 सीटों पर चिराग राजी हो सकते हैं। गुरुवार को दोनों पक्षों की ओर से मीटिंग हुई थी, जिसमें भाजपा और एलजेपी के कई नेता दिन भर मौजूद रहे। इस मीटिंग में नित्यानंद राय के अलावा शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी मौजूद थे।

सबरीमाला मंदिर गोल्ड चोरी मामले में केस दर्ज करने का आदेश

केरल हाईकोर्ट बोला-सोने की हेराफेरी हुई,6 हफ्ते में जांच रिपोर्ट पेश होगी

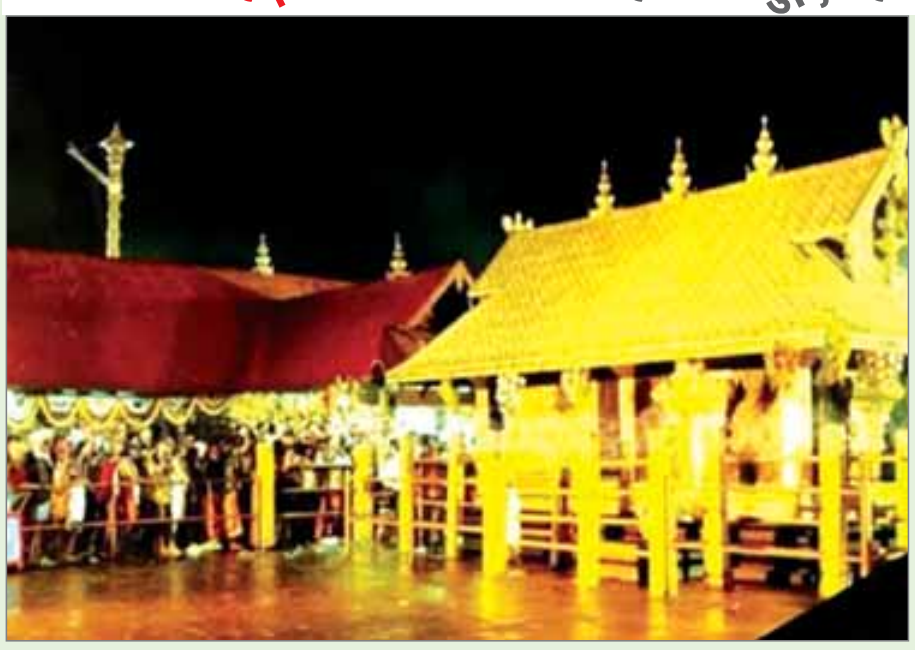

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल हाईकोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि अब तक की जांच से लग रहा है कि सबरीमाला मंदिर के गेट पर रखी दो प्रतिमाओं (द्वारपालक) से सोने की हेराफेरी हुई है। कोर्ट ने मामले में क्रिमिनल केस दर्ज करने और स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम को जांच शुरू करने का निर्देश दिया। जस्टिस राजा विजयराघवन वी और जस्टिस के वी जयकुमार की बेंच ने एसआईटी को छह हफ्ते के भीतर जांच रिपोर्ट दाखिल करने और हर दो हफ्ते में एक बार जांच की स्टेटस रिपोर्ट पेश करने का भी निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा कि जांच से जुड़ी कोई भी जानकारी लीक नहीं होनी चाहिए।

बेंच ने आगे कहा कि अब तक की जांच से पता चला है कि उन्नीकृष्णन पोट्टी (सोने की परत चढ़ाने की पेशकश करने वाले प्रायोजक) को काफी मात्रा में सोना सौंपा गया था। कोर्ट ने कहा कि पोट्टी को लगभग 474.9 ग्राम सोना दिया गया था। हालांकि, रिकॉर्ड से यह पता नहीं चलता कि इतना सोना त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड को (उसके द्वारा) सौंपी गई थी। इससे पहले केरल हाईकोर्ट ने सोमवार को सबरीमाला मंदिर के गोल्ड चोरी के मामले में चिंता जताई थी।

आईएएस सूफिया के बाद अब प्रीति केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर

भोपाल (नप्र)। सूफिया फारुकी वली के बाद अब आईएएस अफसर प्रीति मैथिल भी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाएंगी। प्रीति एमपी कैडर की दूसरी महिला आईएएस अफसर हैं जो भोपाल में रहकर केंद्रीय प्रतिनियुक्ति की अफसर के रूप में काम करेंगी। प्रीति को ट्राइबल को-आपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (ट्राइफेड) में डिप्टी जनरल मैनेजर बनाया गया है। उधर जनगणना निदेशक एमपी का पद 10 दिन से खाली है।

वर्ष 2009 बैच की आईएएस अधिकारी प्रीति मैथिल की ट्राइफेड में प्रतिनियुक्ति पर पांच साल के लिए पदस्थापना की गई है। मैथिल की पोस्टिंग को लेकर डीओपीटी ने मुख्य सचिव एमपी को निर्देश जारी कर दिए हैं और तीन हफ्ते में मैथिल को जॉइन करने के लिए कहा है। प्रीति मैथिल मंडला, सागर और रीवा की कलेक्टर रह चुकी हैं।

फारुकी बन चुकी है निगम में जीएम- इसके अलावा मुख्यमंत्री सचिवालय, किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग में भी वे संचालक और अपर सचिव के पद पर काम कर चुकी हैं। इसके दस दिन पहले 2009 बैच की ही आईएएस अधिकारी सूफिया फारुकी वली को भारतीय खाद्य निगम में एमपी रीजन में जनरल मैनेजर के रूप में पदस्थ किया जा चुका है।

आकाश में अब भारत की आंख बनेगा 'सक्षम'

खतरों को बेअसर करने के लिए सेना का बड़ा प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सेना ने स्वदेशी में विकसित 'सक्षम' काउंटर अनमैन्ड एरियल सिस्टम (यूएएस) ग्रिड सिस्टम की खरीद की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह पूरी तरह से स्वदेशी है, जो रक्षा प्रौद्योगिकी में सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान की सफलता है। रक्षा अधिकारियों के अनुसार, इस प्रणाली को रियल टाइम में शत्रुओं के ड्रोनों और मानवरहित हवाई प्रणालियों का पता लगाने, उन्हें ट्रैक करने, पहचानने और उन्हें निष्क्रिय करने के लिए डिजाइन किया गया है। इससे संपूर्ण हवाई क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित होगी जिसमें जमीन से तीन हजार मीटर (10 हजार फीट) ऊपर तक का हवाई क्षेत्र शामिल है। परियोजना को फास्ट ट्रैक प्रोक्योरमेंट (एफटीपी) रूट के तहत मंजूरी दी गई है।

राजनाथ सिंह ने देखी एफ-35 की हवा में री फ्यूलिंग

भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच 3 बड़े समझौते पर हस्ताक्षर

कैनबरा (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया ने गुरुवार को अपने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग और सैन्य इंटरऑपरेबिलिटी को और गहरा करने का संकल्प लिया। दोनों देशों ने तीन प्रमुख समझौतों पर हस्ताक्षर किए और 'क्वाड' देशों के बीच मौजूद रणनीतिक एकरूपता पर विश्वास जताया। यह बैठक उस समय हुई है जब ट्रंप प्रशासन यह संकेत दे रहा है कि अमेरिका अब चीन का मुकाबला करने वाली इंडो-पैसिफिक रणनीति में पहले जैसा निवेश नहीं करेगा। कैनबरा में हुई प्रतिनिधिमंडल स्तर की बैठक के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष रिचर्ड मार्ल्स ने गोपनीय सूचनाओं के आदान-प्रदान, पारस्परिक पनडुब्बी खोज और बचाव सहयोग के साथ-साथ संयुक्त स्टाफ वार्ता तंत्र की स्थापना से जुड़े तीन अहम समझौतों पर हस्ताक्षर किए। दोनों देश अब संयुक्त समुद्री सुरक्षा सहयोग रोडमैप को अंतिम रूप देने और 2009 के सुरक्षा समझौते की जगह लेने वाले दीर्घकालिक रक्षा ढांचे पर भी काम कर रहे हैं। अमेरिका के साथ बढ़ते टैरिफ विवाद और कूटनीतिक तनाव के बीच भारत ऑस्ट्रेलिया के साथ है।

लेह में 16 दिन बाद भी हालात खराब

● टूरिस्ट नहीं आ रहे, फिर भी दावा-सब नॉर्मल है ● आधी रात से इंटरनेट बहाल, बाजारों में सन्नाटा

लेह (एजेंसी)। साल के करीब 7-8 महीने पर्यटकों से भरा रहने वाला लेह का मुख्य बाजार सूना पड़ा है। होटल खाली हैं। 5 से 10 हजार वाले रूम 500 से 1 हजार रुपए के मामूली किराए में भी नहीं भर रहे। टैक्सी स्टैंड पर गाड़ियां खाली खड़ी हैं। जितने टूरिस्ट अभी यहां हैं, उससे 10 गुना ज्यादा सुरक्षाकर्मी पहरा दे रहे हैं। इंटरनेट बंद है। हमने ऐसी जिंदगी पहले कभी नहीं जी। हिंसा ने हमारे सीजन की खुशियां छीन लीं। और उप राज्यपाल दावा कर रहे हैं कि लेह में सब नॉर्मल है। जो हालात हैं, उसे हमारे लिए नॉर्मल नहीं कह

सकते। यह बात जब रिगजिन वाग्मो लेचिक बोल रही थीं, तब उनकी आंखों में आंसू थे। लेचिक ऑल लद्दाख होटल एंड गेस्ट हाउस एसोसिएशन लेह की अध्यक्ष भी हैं। लेचिक ने बताया कि पहलगाम की घटना ने 50 फीसदी टूरिस्ट को नुकसान पहुंचाया था, लेह की हिंसा में यह बढ़कर 80 फीसदी हो गया है। 2000 गेस्टहाउस, होटल्स खाली पड़े हैं। लद्दाख की कुल जीडीपी में पर्यटन का हिस्सा 50 फीसदी है। अक्टूबर में हम अगले मार्च-अप्रैल की बुकिंग शुरू कर देते थे, लेकिन इस बार एक भी प्री-बुकिंग नहीं है। अगले कुछ दिन में बर्फीली ठंड शुरू होते ही यहां सब कुछ बंद हो जाएगा। हम आज नहीं कमाएंगे तो अगले छह महीने गुजारा कैसे करेंगे। लद्दाख की राजधानी लेह में स्थानीय लोगों के विरोध के बाद इंटरनेट सेवा गुरुवार रात बहाल कर दी गई। हालांकि, इसका कोई ऑर्डर जारी नहीं हुआ।

तमिलनाडु में दवा जांच में की गई भारी अनदेखी

नई दिल्ली (एजेंसी)। तमिलनाडु में बने कफ सिरप कोल्ड्रिफ; के कारण मध्य प्रदेश-राजस्थान में बच्चों की मौत का मामला चर्चा में है। अब भारत के महालेखा परीक्षक (सीएजी) की तमिलनाडु के पब्लिक हेल्थ इंफ्रास्ट्रचर एंड

मैनेजमेंट ऑफ हेल्थ सर्विस से जुड़ी एक रिपोर्ट सामने आई है। सीएजी ने 10 दिसंबर 2024 की तमिलनाडु की पब्लिक हेल्थ इंफ्रास्ट्रचर एंड मैनेजमेंट ऑफ हेल्थ सर्विस पर अपनी परफॉर्मेंस ऑडिट (रिपोर्ट) में बताया था कि राज्य में ड्रग इंस्पेक्शन (टेस्टिंग) में कमी देखी गई थी। साथ ही ड्रग्स (दवा) सैंपल कलेक्शन में भी कमी की गई थी। इधर सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई या ज्यूडिशियल जांच की मांग खारिज कर दी।

कैडर इयर अलॉट, नारायण, बुंदेला होंगे 2018 बैच के आईएएस

एक माह पहले प्रमोट हुए 16 अफसरों की सीनियरिटी तय, दो नए आईएएस मिले

भोपाल (नप्र)। राज्य प्रशासनिक सेवा से भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रमोट हुए 16 अफसरों को केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण मंत्रालय (डीओपीटी) ने कैडर इयर अलॉट कर दिया है। एक माह पहले डीओपीटी द्वारा किए गए नोटिफिकेशन में इन्हें आईएएस अवार्ड किया गया था। वर्ष 2023 और 2024 की डीपीसी के बाद आईएएस बने अफसरों को 2018 से 2020 तक के कैडर इयर अलॉट किए गए हैं।

नारायण प्रसाद नामदेव और कैलाश बुंदेला को सात साल की सीनियरिटी का लाभ मिला है और दोनों ही अधिकारी 2018 बैच के आईएएस माने जाएंगे। वहीं दस प्रमोटी आईएएस अफसरों को 2019 और चार अफसरों को 2020 बैच का आईएएस अफसर घोषित किया गया है। उधर, एमपी को सीधी भर्ती के दो नए आईएएस अफसर भी मिले हैं।

सीनियरिटी में आठ साल का लाभ मिला- नारायण प्रसाद नामदेव का सिलेक्शन 2023 बैच के आईएएस अफसर के रूप में हुआ है और विभागीय जांच खत्म होने के बाद आईएएस बनाए गए नामदेव को सीनियरिटी में आठ साल का लाभ मिला है, जिसके चलते वे 2015 बैच के आईएएस के लिए इंटाइटल्ड हैं, लेकिन आईएएस रेगुलेशन ऑफ सीनियरिटी रूल्स 1987 में हुए संशोधन के आधार पर उन्हें 2018 बैच अलॉट किया है और उनका नाम 2022 में आईएएस बनाई गई अर्चना सोलंकी के नाम के नीचे रखा गया है।

इस आधार पर नारायण नामदेव अब 2018 बैच के आईएएस अफसर होंगे। इसी तरह कैलाश बुंदेला को भी 2018 बैच अलॉट किया है। ये दोनों ही अधिकारी सीनियरिटी में 2019 बैच के सीधी भर्ती के सीनियर आईएएस अधिकारी श्रेयस कुमट से सीनियर होंगे। 2023 बैच में आईएएस के लिए सिलेक्ट हुए राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों नंदा भलावे कुशरे, अनिल कुमार डामोर, सविता झानिया, सारिका भूरिया, कमल सोलंकी और जितेंद्र सिंह चौहान को 2019 का वर्ष अलॉट किया है। इन सभी प्रमोटी अफसरों का नाम आईएएस 2019 बैच के सीधी भर्ती के जूनियर आईएएस अफसर नागार्जुन बी गौड़ा के नाम के नीचे और 2020 बैच के सीधी भर्ती के सीनियर आईएएस अफसर हिमांशु जैन के नाम के ऊपर होगा।

आईपीएस सुसाइड केस

हरियाणा डीजीपी कपूर का जाना लगभग तय

● आलोक को जिम्मेदारी देने की तैयारी,15 अफसरों पर एफआईआर हुई

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के सीनियर आईपीएस अफसर वाई पूरन कुमार के सुसाइड केस में चीफ सेक्रेटरी अनुराग रस्तोगी, डीजीपी शत्रुजीत कपूर और रोहतक एसपी नरेंद्र बिजारणिया सहित 15 अफसरों पर गुरुवार देर रात एफआईआर दर्ज कर ली गई। चंडीगढ़ पुलिस की ओर से सुसाइड नोट को आधार बनाते हुए सेक्टर-11 थाने में 156 नंबर एफआईआर भारत न्याय संहिता की धारा 108, 3(5) और एससी/एसटी एक्ट की धारा 3(1)(आर) के तहत दर्ज की गई है। हरियाणा के इतिहास में यह पहली बार है, जब किसी मामले में चीफ सेक्रेटरी और डीजीपी सहित 14 पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों पर रिपोर्ट दर्ज हुई है। हालांकि आईपीएस पूरन की आईएएस पत्नी अमनीत पी. कुमार ने इस एफआईआर पर ऐतराज जताए हैं। उन्होंने एफआईआर पर अलग से नाम पर ऐतराज किया।

● **मुकदमा शुरू करने से पहले अनुमति जरूरी-** संविधान विशेषज्ञ व सुप्रीम कोर्ट के बकौल विराम गुप्ता ने बताया कि सरकारी कर्मचारी पर केस दर्ज करने पर रोक नहीं है, लेकिन मजिस्ट्रेट कोर्ट में मुकदमा शुरू होने से पहले सक्षम अधिकारी या सरकार की अनुमति की जरूरत पड़ सकती है। अगर अभियोजन को बुलाने की अनुमति नहीं दी जाए तो इस आधार पर केस भी खारिज हो सकता है।

डर...डॉक्टर का नाम बता भर्ती हो रहे बच्चे

हमीदिया अस्पताल में दो दिन में पहुंचे दो बच्चे, अस्पताल प्रबंधन ने कहा- स्थिति नॉर्मल है

भोपाल (नप्र)। जहरीले कफ सिरप के कारण एमपी में अब तक 25 बच्चों की मौत हो चुकी है। जहां एक तरफ हर माता-पिता के मन में कफ सिरप को लेकर भय की स्थिति पैदा कर दी है। वहीं, दूसरी ओर दो दिन में दो बच्चे इलाज के लिए भोपाल के हमीदिया अस्पताल पहुंचे हैं। इन दोनों बच्चों को पहले खांसी और सर्दी की समस्या हुई थी। इसके बाद एक सप्ताह तक यह स्वस्थ रहे। हाल ही में इन्हें फिर बुखार आया। जिसने परिजन को चिंता में डाल दिया। यही वजह रही कि वे सीधे बेहतर इलाज के लिए हमीदिया अस्पताल पहुंचे।

दोनों का इलाज डॉ. सोनी से हुआ- इन दोनों बच्चों का इलाज डॉ. प्रवीण सोनी से चला था। जब परिजन बच्चों को लेकर हमीदिया अस्पताल आए तो उन्होंने सबसे पहली बात यही कही कि बच्चों का इलाज डॉ. सोनी ने किया था। जब हमने सुना कि उनके द्वारा लिखा गया कफ सिरप जहरीला निकला है। तब से हम चिंतित थे। यही कारण रहा कि बुखार आने पर सीधे बच्चे को लेकर भोपाल आ गए।

यह दो बच्चे आए भोपाल

बैतूल निवासी 7 वर्षीय किंजल यादव, बुधवार को हमीदिया अस्पताल आई। यहां उसकी खून की जांच के अलावा किडनी फंक्शन टेस्ट कराया गया। रिपोर्ट नॉर्मल आने और 24 घंटे बच्ची को अंडर ऑब्जर्वेशन

में रखा गया। जिसमें बच्ची की स्थिति सामान्य मिली। ऐसे में गुरुवार शाम उसे डिसचार्ज कर दिया गया है। बैतूल की ही दो वर्षीय थान्या गुरुवार को दोपहर में हमीदिया अस्पताल पहुंची। बच्ची को फिलहाल बुखार आ रहा है। ऐसे में उसे पीडियाट्रिक विभाग के एचडीयू वार्ड में भर्ती किया गया। जहां उसकी जरूरी जांच कराई गई है। रिपोर्ट आने के बाद स्थिति क्लियर हो सकेगी।

बच्ची की तबीयत बिगड़ने पर भोपाल लाए परिजन- थान्या के पिता नितिन ने बताया कि 23 सितंबर को डॉ. प्रवीण सोनी के पास इलाज कराने गए थे। चार दिन तक डॉ. प्रवीण सोनी द्वारा लिखी गई दवाएं खिलाईं। 27 सितंबर को जब मामला बढ़ने लगा और हमें लगा कि उनके द्वारा लिखी दवाओं से बच्चों की तबीयत बिगड़ रही है, तो हमने सभी दवाएं फेंक दीं।

नितिन ने बताया कि डॉ. सोनी ने सिरप लिखा था, लेकिन कौन-सा था, हमें याद नहीं है।

एचओडी ने कहा- बच्चियां स्वस्थ हैं

पीडियाट्रिक विभाग की एचओडी डॉ. मंजूषा गोयल ने कहा कि दोनों बच्चियां स्वस्थ हैं। एक को डिस्चार्ज कर दिया गया है। दूसरी बच्ची भी एक्टिव है। उसकी कुछ जांच कराई गई हैं। जैसे ही बच्चे हमारे पास आए थे। हमने तत्काल उन्हें भर्ती कर जांच शुरू कर दी थी। दोनों बच्चों का इलाज आयुष्मान योजना के तहत चल रहा है।

प्रबंधन ने कहा- हमारे डॉक्टर सतर्क हैं- हमीदिया अस्पताल के एचओडी डॉ. सुनीत टंडन ने कहा कि हमारे डॉक्टर पूरी तरह सतर्क हैं। अब तक जो भी एडवाइजरी और सलाह सरकार की तरफ से आई हैं। उनका पूर्ण पालन किया जा रहा है। जो बच्चे हमारे पास इलाज के लिए आए, उनका भी प्राथमिक्ता के साथ उपचार किया गया है।

सपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव बोले- डिप्टी सीएम पर केस दर्ज हो

● मंत्री पद से हटाने की मांग की; कहा- बिना जांच जहरीला कफ सिरप मार्केट में कैसे आया?

भोपाल (नप्र)। जहरीले कफ सिरप के कारण छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, बैतूल के दो दर्जन से ज्यादा बच्चों की मौतें हो चुकी हैं। इस मामले में समाजवादी पार्टी ने मप्र के डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ला के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज करने और उन्हें मंत्री पद से हटाने की मांग की है।

समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ मनोज यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा-छिंदवाड़ा इलाके में कफ सिरप के कारण जिन बच्चों की मृत्यु हुई है उन परिवारों के प्रति गहरी संवेदना है। स्वास्थ्य मंत्री पर गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज होना चाहिए। उन बच्चों की जान भाजपा सरकार और स्वास्थ्य मंत्री की लापरवाही के कारण गई है, इसलिए उनके खिलाफ मामला दर्ज किया जाना चाहिए।

50 लाख का मुआवजा दिया जाए- सपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा हमारी पार्टी की यह मांग है। कि हर परिवार को 50-50 लाख रुपए का मुआवजा मिलना चाहिए। जिन परिवारों के बच्चों की मृत्यु हुई है, उनके एक सदस्य को नौकरी मिलनी चाहिए। क्योंकि, जो बच्चे असमय चले गए वो बड़े होकर पढ़-लिखकर नौकरियों में जाते और परिवार का नाम रोशन करते।

इलाज का पैसा सरकार दे- सपा प्रदेशाध्यक्ष ने कहा- हमारी यह मांग है कि जिन बच्चों का इलाज चल रहा है, वहां कोई सरकारी डॉक्टर नियुक्त किया जाए जो वहां उपचार के बिल का भुगतान करे।

बच्चों की ट्रेसिंग कराई जाए- सपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा- मेडिकल स्टोर्स से इस तरह के कफ सिरप की जितनी भी बिक्री हुई है, जिन बच्चों ने इन कफ सिरप का सेवन किया है उनकी ट्रेसिंग कराकर उनकी निगरानी होनी चाहिए।

जानवरों पर भी जांच कर दवा प्रयोग की जाती- समाजवादी पार्टी ने यह मांग कि है कि इस मामले में जितने भी जिम्मेदार अधिकारी हैं जो सैंपल लेकर टेस्ट कराते हैं। उन्होंने इस दवा को बेचने की परमिशन कैसे दे दी? उन पर कार्रवाई होनी चाहिए। अगर फसलों, पशुओं की दवाएं भी मार्केट में आती हैं तो उनका पहले टेस्ट किया जाता है फिर ये दवाएं बिना जांच कैसे आ गईं?

लेकिन इस सरकार ने घूस लेकर भ्रष्टाचार किया। इन सारी बातों का जवाब दें और अगर मुख्यमंत्री जी कहते हैं कि मैं पीड़ित परिवारों के साथ हूं तो सबसे पहले डिप्टी सीएम राजेन्द्र शुक्ला को मंत्री पद से बर्खास्त करना चाहिए।

दैवेभो रखने पर 25 साल से प्रतिबंध, फिर भी कीं नियुक्तियां

नगर निकायों से 17 दिन में मांगी रिपोर्ट

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के नगरीय निकायों में 25 साल पहले बंद हो चुकी दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की नियुक्ति व्यवस्था को दरकिनार करते हुए कई जगहों पर नियुक्तियां की गई हैं। मामला सामने आने के बाद नगरीय विकास और आवास विभाग ने सभी नगरीय निकायों से विस्तृत रिपोर्ट तलब की है। विभाग ने 28 मार्च 2000 के बाद नियुक्त किए गए सभी दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की जानकारी 25 अक्टूबर तक अनिवार्य रूप से भेजने के निर्देश दिए हैं। साथ ही ये भी पूछा है कि इन कर्मचारियों की नियुक्ति के समय कौन अधिकारी (आयुक्त या मुख्य नगर पालिका अधिकारी) पदस्थ था और क्या राज्य शासन से इस संबंध में कोई अनुमति ली गई थी।

● **अधिकारियों पर भी हो सकती है कार्रवाई-** सूत्रों के अनुसार, विभाग को भेजी जाने वाली जानकारी के बाद इन नियुक्तियों को अवैध करार दिया जा सकता है और नियुक्ति देने वाले अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की जा सकती है।

● **नेता प्रतिपक्ष सिंघार बोले, 80 हजार परिवारों का भविष्य अधर में-** विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने एक्स पर ट्वीट कर कहा कि मध्यप्रदेश नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने सभी नगरीय निकायों में 28 मार्च 2000 के बाद दैनिक वेतन पर नियुक्त कर्मचारियों का 25 अक्टूबर 2025 तक विवरण मांगा है। इस निर्णय से प्रदेश के करीब 80,000 दैनिक वेतनभोगी और उनके परिवारों का भविष्य अधर में है।

भोपाल के पीएंडटी-कोटरा इलाके में लगी आग

टेंट-कैटरिंग दुकान में लाखों का सामान जला; अंदर सिलेंडर भी रखे थे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पीएंडटी-कोटरा में आराधना चौराहे के पास एक टेंट और कैटरिंग दुकान में शुक्रवार सुबह आग लग गई। दुकान से धुआं उठते देख राहगीरों ने फायर कंट्रोल रूम पर सूचना दी। इसके बाद करीब ढाई घंटे में आग काबू में आ सकी। आग से लाखों रुपए का सामान जलकर राख हो गया। अंदर सिलेंडर भी रखे थे। गनीमत रही कि वो फटे नहीं, वरना बड़ा हादसा भी हो सकता था। आगजनी की घटना सुबह 7 बजे की बताई जा रही है। साढ़े 9 बजे तक आग काबू में आ सकी। टेंट की दुकान लल्ला प्रेम द्विवेदी की है। यहां टेंट और कैटरिंग का पूरा सामान रखा था।

3 दमकलों ने पाया काबू

आग लगने की सूचना मिलते ही माता मंदिर और पुल बोगदा फायर स्टेशन से 3 दमकलें मौके पर पहुंची। इसके बाद आग पर काबू पाया गया। इस दौरान लोग भी आगे बुझाते हुए नजर आए।

रजाई-गद्दों से भड़की आग- आग लगने की वजह शार्ट सर्किट बताई जा रही है। दुकान में रजाई-गद्दें भरे हुए थे। इससे आग तेजी से भड़क गई। रहवासी सोनू सूर्यवंशी ने बताया कि दुकान में से धुआं निकलते देख दमकल को सूचना दी गई। आग से रजाई-गादी, पर्दे समेत टेंट का सभी सामान जल गया। 10 से 12 लाख रुपए का नुकसान बताया जा रहा है।

मासूमों की मौत के विरोध में प्रदर्शन, रोशनपुरा जाम

मौत के सिरप की तलाश... 30 मेडिकल स्टोर्स की जांच, कार्रवाई के डर से 80 प्रतिशत दुकानों के शटर गिरे

भोपाल (नप्र)। कफ सिरप से 23 बच्चों की मौत के विरोध में कांग्रेस ने रोशनपुरा में कैंडल मार्च निकाला। इसमें पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह समेत बड़ी संख्या में कांग्रेसी जुटे। इधर, प्रदर्शन की वजह से रोशनपुरा में वाहनों की लंबी कतार लग गई। करीब घंटे भर ऐसी स्थिति बनी रही। प्रदेश में कफ सिरप से 23 बच्चों की मौत के बाद दवा दुकानों की जांच का सिलसिला जारी है। गुरुवार को करीब 30 से ज्यादा खुदरा दवा दुकानों की जांच की गई। इस दौरान उनकी खरीदी-बिक्री के रिकॉर्ड को चेक किया गया। हालांकि, कहीं पर कोई अमानक पाई गई दवा की बोतले नहीं मिली। इधर, कार्रवाई के डर से गुरुवार दोपहर शहर के तमाम बाजारों में फुटकर दवा दुकानें बंद रहीं। जो दुकानें खुली रहीं वहां ड्रग इंस्पेक्टरों ने दुकान संचालकों को ताकीद किया कि 4 साल से छोटे बच्चों को कॉम्बिनेशन वाला सिरप न दिया जाए। बिना डॉक्टर्स के पर्चा देखे कोई दवा न दें। संचालकों को केंद्र की गाइडलाइन के बारे में बताया गया। रोजाना का रिकॉर्ड मेंटेन करने की सलाह दी गई है। ड्रग कंट्रोलर दिनेश श्रीवास्तव ने बताया कि तीन कफ सिरप को नॉट ऑफ स्टेंडर्ड क्वालिटी (एनएसक्यू) की कैटेगरी में रखा है। इनमें जहरीले डायएथिलीन ग्लाइकॉल की मात्रा 0.1 प्रतिशत के बजाए ज्यादा मिली है। तीनों की बिक्री पर रोक है।

अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में ही एमपी में रातें ठंडी

राजगढ़ में पारा 16 डिग्री से नीचे, 14 अक्टूबर से बारिश का नया सिस्टम

भोपाल (नप्र)। अक्टूबर के दूसरे सप्ताह में ही मध्यप्रदेश के कई शहरों में रातें ठंडी हो गई हैं। राजगढ़ सबसे ठंडा है। यहां पारा 16 डिग्री से नीचे है। भोपाल में पारा 18 डिग्री के आसपास है। मौसम विभाग के अनुसार, उत्तरी हवा की वजह से ऐसा मौसम है। आमतौर पर तीसरे-चौथे सप्ताह में पारा लुढ़कने लगता है।

वहीं, अगले 4 दिन तक प्रदेश में कहीं भी तेज बारिश का अलर्ट नहीं है। गुरुवार को भी प्रदेश में बारिश नहीं हुई। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन-जबलपुर समेत अधिकांश शहरों में दिन में धूप खिली रही। भोपाल में ठंडी हवा भी चलती रही।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि 14 अक्टूबर को कहीं-कहीं बारिश होने के आसार है। शुक्रवार को पूर्वी हिस्से के तीन जिलों में बूंदाबांदी हो सकती है। 11, 12 और 13 अक्टूबर को वेदर ड्राई रहेगा। यानी, कहीं भी बारिश होने का अलर्ट नहीं है।

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी की कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से भेंट

भोपाल। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी ने भारत सरकार के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से भेंट की। इस दौरान दोनों के बीच ग्रामीण भारत में मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता को सशक्त बनाने और किसानों के मानसिक स्वास्थ्य संरक्षण पर सार्थक चर्चा हुई।

डॉ. त्रिवेदी ने कृषि मंत्री को अपनी पुस्तक ओवरथिंकिंग से आजादी भेंट की, जो आमजन को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से लिखी गई है। उन्होंने इस अवसर पर एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया देशभर में तहसील एवं ग्रामीण स्तर पर 'कीटनाशक बैंक' की स्थापना का। उनका मानना है कि कीटनाशक बैंक बनने से किसानों को कीटनाशकों तक अनियंत्रित पहुंच पर रोक लगेगी, जिससे आवेश में स्वयं को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकेगी।

पन्ना में बच्चों से भरी स्कूल बस पलटी

स्कूल जाते समय तेज रफ्तार के कारण हादसा; 6 छात्र घायल, चालक मौके से फरार

पन्ना (नप्र)। पन्ना जिले के अमानगंज थाना क्षेत्र में एक मिनी स्कूल बस बेकाबू होकर पलट गई। रामनगर के पास हुए इस हादसे में करीब 6 स्कूली छात्र घायल हो गए। घायलों को डायल 112 की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमानगंज में भर्ती कराया गया है।

सूचना मिलने पर अमानगंज थाना प्रभारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और बचाव कार्य शुरू किया। वहीं बस मौजूद शिक्षक ने बताया बस तेज रफ्तार में थी। इस घटना के बाद घबराकर चालक भी मौके से फरार हो गया। वह बच्चे बस में भी फंस रहे।

यह घटना शुक्रवार को सुबह 10 से 10:30 बजे के बीच हुई। सरस्वती गायत्री मंदिर विद्यालय झरकुआ की मिनी बस बांधी,

बर्बसपुरा, भानपुर और भररपुर से छात्र-छात्राओं को लेकर झरकुआ स्थित स्कूल जा रही थी। रामनगर के पास बनी पुलिया पर बस अचानक बेकाबू होकर पलट गई। बस में लगभग 30 छात्र-छात्राएं सवार थे। बस में सवार छात्रा शालिनी रजक ने बताया कि बस रोज की तरह बच्चों को स्कूल ले जा रही थी, तभी पुलिया पर यह हादसा हुआ। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। सभी घायलों का उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमानगंज में जारी है।

चालक मौके से फरार- थाना प्रभारी रवि जादौन ने बताया कि सरस्वती गायत्री मंदिर विद्यालय झरकुआ बस रामनगर के पास पलट गई। इस घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने बच्चों को पलटी पड़ी बस से बाहर निकाला। वहीं बस चालक मौके से फरार हो गया।

घायल बच्चों के नाम

इस हादसे में पारस साहू (10 वर्ष, निवासी बंधिकाला), पवन ढीमर (12 वर्ष, निवासी बर्बसपुरा), महेंद्र साहू (7 वर्ष, निवासी बंधिकाला), अमित वंशकार (13 वर्ष, निवासी बर्बसपुरा), आयुषी अहिरवार (11 वर्ष, निवासी बर्बसपुरा), अमित रजक (7 वर्ष, निवासी बर्बसपुरा) और शिक्षक अशोक अहिरवार (31 वर्ष, निवासी झरकुआ) घायल हुए हैं।

बड़ा तालाब-बिसनखेड़ी, गौरागांव में सबसे ज्यादा अतिक्रमण, सर्वे नहीं

एसडीएम बोलीं- 2 दिन में टीम बना देंगे, खानूगांव-बैरागढ़ में सीमांकन पूरा

भोपाल (नप्र)। एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रब्नल) की फटकार के बाद कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने बड़ा तालाब के सीमांकन के लिए 4 एसडीएम को जिम्मेदारी सौंपी है। बैरागढ़ क्षेत्र में काम शुरू भी हो चुका है, लेकिन जिस हिस्से- बिसनखेड़ी, गौरागांव और सूरजनगर में सबसे ज्यादा अतिक्रमण या कब्जा है, वहां अब तक नपती शुरू नहीं हुई है। यहीं पर कई रसूखदारों के घर, रिसॉर्ट या फार्म हाउस है।

मीडिया की टीम बड़ा तालाब के इन्हीं हिस्सों में पहुंच चुकी है। यहां एफटीएल मुनार से सटकर ही पक्के निर्माण बने हुए हैं। ऐसे 1 या 2 नहीं, बल्कि सैकड़ों निर्माण है। भदभदा, बिसनखेड़ी, गौरागांव, बील गांव और सूरजनगर में बड़ी बिल्डिंग, फार्म हाउस, रिसोर्ट भी है। यहां कार्रवाई का जिम्मा टीटी नगर एसडीएम अर्चना रावत का हैं, लेकिन उन्होंने अब तक कार्रवाई शुरू नहीं की। इस संबंध में उन्होंने कहा कि शुक्रवार को टीम गठित कर देंगे। राजस्व, नगर निगम-टीएंडसीपी की संयुक्त टीम बनाएंगे। इसके बाद सर्वे शुरू करेंगे।

3 में से दो एसडीएम की कार्रवाई नहीं- बड़ा तालाब का बड़ा हिस्सा शहर वृत्त, हुजूर और बैरागढ़ अनुभाग में भी आता है। बैरागढ़ अनुभाग ने तो गुरुवार से ही सीमांकन शुरू कर दिया था। इसमें खानूगांव में कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद का कॉलेज तक सीमांकन हो चुका है। बैरागढ़

एसडीएम रविशंकर राय ने बताया कि खानूगांव और बैरागढ़ इलाके में सीमांकन किया है। अगले दो दिन में सीमांकन पूरा कर लेंगे।

हुजूर एसडीएम विनोद सोनकिया ने बताया कि बड़ा तालाब का कम ही हिस्सा है। इसका सर्वे कराएंगे। शहर वृत्त एसडीएम दीपक पांडे ने कार्रवाई शुरू नहीं कराई। इस वजह से उनके यहां बड़ा तालाब किनारे कितने अतिक्रमण है, यह पता नहीं चल पाएगा।

अभी एफटीएल तय करेंगे, कार्रवाई बाद में- बड़ा तालाब किनारे अवैध कब्जे को लेकर पर्यावरणविद राशिद नूर ने याचिका दाखिल की थी। इसके बाद एनजीटी ने सीमांकन करने के आदेश दिए हैं। बैरागढ़ तहसीलदार हर्ष विक्रम सिंह ने बताया कि अभी एफटीएल के अनुसार सीमांकन कर रहे हैं। यह रिपोर्ट एनजीटी में प्रस्तुत की जाएगी। इसके बाद हटाने की कार्रवाई वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर करेंगे।

दो तरह की मुनारें

बड़ा तालाब के किनारों पर भू-माफिया भी सक्रिय है, जो कम दाम पर प्लाट देने का वादा कर रहे हैं। उन्होंने और लोगों ने इस दायरे को लेकर ही भ्रम की स्थिति भी खड़ी की है। जिन मुनारों से एफटीएल की सीमा तय होती है, उन्हीं में फर्जीवाड़ा भी किया गया है। मौके पर एफटीएल बताने वाली 5 तरह की मुनारें लगी हुई है। इनमें से एक में बीएमसी यानी, भोपाल म्युनिसिपल कॉरपोरेशन लिखा है। बाकी पर सफेद रंग है। लिखा कुछ नहीं है। इन्हीं फर्जी मुनारों के आसपास अतिक्रमण और अवैध निर्माण है।

एनजीटी ने दो सप्ताह में मांगी है रिपोर्ट- बड़ा तालाब के अतिक्रमण पर हाल ही में एनजीटी फिर सख्त हुआ। इसके बाद सर्वे शुरू किया गया। याचिका पर्यावरणविद् नूर ने लगाई थी। इस पर एनजीटी ने स्पष्ट किया कि वेटलैंड्स (संरक्षण और प्रबंधन) नियम, 2017 का नियम-4 अब पूरे मध्यप्रदेश के सभी जलाशयों पर लागू होगा।

एक्सपर्ट नूर ने बताया, बड़ा तालाब रामसर साइट है। नियम अनुसार, शहरी सीमा में 50 मीटर और ग्रामीण सीमा में 250 मीटर के दायरे में कोई निर्माण नहीं होना चाहिए, लेकिन एफटीएल मुनार से सटकर ही पक्के निर्माण बने हुए हैं।

संपादकीय

तेजस्वी का मास्टर स्ट्रोक?

बिहार में राजद नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने विधानसभा चुनावों की घोषणा के बाद पहला बड़ा धमाका किया है। उनकी इस घोषणा पर कई व्यावहारिक प्रश्न चिन्ह होने के बावजूद कुछ लोग इसे मास्टर स्ट्रोक बता रहे हैं। गुरूवार को पटना में एक पत्रकारवार्ता में तेजस्वी ने ऐलान किया कि अगर राज्य में राजदनीत महागठबंधन की सरकार बनी तो हर उस घर में एक सरकारी नौकरी दी जाएगी, जहां किसी के पास सरकारी नौकरी नहीं है। तेजस्वी ने कहा कि यह महज चुनावी जुमला नहीं, बल्कि कानूनी रूप से बाध्यकारी 'प्रण' बताया। यह एक ऐसा वादा है जो पूरे राज्य की राजनीति में भूचाल ला सकता है। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता अब परिवर्तन चाहती है। राज्य में महागठबंधन की सरकार बनते ही शपथ ग्रहण के 20 दिनों के भीतर एक नया अधिनियम (कानून) पारित किया जाएगा, जो हर परिवार को एक सरकारी नौकरी का अधिकार देगा। यह कानून विशेष रूप से उन परिवारों पर लागू होगा, जहां पहले से कोई सरकारी नौकरी नहीं है। तेजस्वी ने दावा किया कि 20 महीनों के अंदर बिहार में ऐसा कोई परिवार नहीं बचेगा, जिसके पास सरकारी नौकरी न हो। अपनी घोषणा और दावों के बचाव में तेजस्वी ने कहा कि बहुत लोगों का सवाल होगा कि कैसे देंगे? हमने सारा डेटा निकाला है और सभी सर्वे करा लिए हैं और मेरा प्रण है कि जो हो सकता है वही हम करेंगे। हम सभी परिवारों की सूची तैयार कर नौकरी का नवजागरण लाएंगे। सामाजिक न्याय के बाद अब आर्थिक न्याय का समय है। उन्होंने याद दिलाया कि 2020 के विधानसभा चुनाव के समय हमने 10 लाख नौकरियों का वादा किया था, जिस पर नीतीश कुमार ने तंज कसा था कि 'पैसा क्या अपने बाप के घर से लाओगे'। तेजस्वी ने कहा कि हम वादे पूरे करने वाले हैं, जुमलेबाजी नहीं करते। मेरा कर्म बिहार है, मेरा धर्म बिहारी। आज राज्य में बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है। तेजस्वी ने यह दावा भी किया कि जब महागठबंधन सत्ता में था तो हमने 5 लाख लोगों को नौकरियां दी थीं। खास बात यह है कि ये अहम घोषणा तेजस्वी ने अकेले ही की। उनके साथ महागठबंधन का कोई साथी नहीं था। जिस ढंग से तेजस्वी यह ऐलान कर रहे थे, उससे लगता है कि वो मान बैठे हैं कि बिहार में अगले सीएम की शपथ उन्हें ही लेना है। रहा सवाल इस घोषणा की व्यावहारिकता तो बिहार में करीब ढाई करोड़ परिवार ऐसे हैं, जहां से कोई भी व्यक्ति सरकारी नौकरी में नहीं है। अब सवाल यह है कि अगर तेजस्वी के कहेनुसार सभी परिवारों को सरकारी नौकरी दी जाए तो करीब ढाई करोड़ यानी बिहार के हर पांचवे व्यक्ति को सरकारी नौकरी देनी होगी। यह संख्या समूचे देश के सरकारी कर्मचारियों की कुल संख्या से भी ज्यादा है। और इसके लिए पैसा कहां से आएगा, यह तेजस्वी ही जानें। और इतने सरकारी नौकर करेंगे क्या? वैसे भी बिहार की माली हालत पहले ही पतली है। अगर उसकी तुलना मप्र से करें तो बिहार की आबादी मप्र से डेढ़ गुना है, लेकिन उसका वार्षिक बजट से भी कम है। दूसरे, अभी तो नीतीश सरकार को एनडीए में होने के कारण केन्द्र सरकार से काफी मदद मिल रही है, लेकिन महागठबंधन की सरकार बनी तो इसमें भी कमी आएगी। तो क्या तेजस्वी बजट का सारा पैसा सरकारी कर्मचारियों को तनख्वाह में बांट देंगे? जाहिर है कि यह घोषणा हवाई ज्यादा है। लेकिन क्या बिहार की जनता और खासकर युवा इस पर रीझ कर महागठबंधन को जिता देंगे, क्या सरकारी नौकरी का लालच बिहार की जातिवादी राजनीति पर भारी पड़ेगा? इसके जवाब चुनाव नतीजों में ही मिलेंगे।

नजरिया

डॉ. ललित कुमार

लेखक इनवर्टिस विश्वविद्यालय बरेली में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

जन सैलाब क्या बसपा के ताकत की पुनर्वापसी है?

बसपा संस्थापक मान्यवर कांशीराम द्वारा कमाई हुई उनकी सबसे बड़ी पूंजी है, जो उन्होंने बरसों तक बहुजन समाज को उनके हक और अधिकार के लिए सत्ता में भागीदारी दिलाने के लिए एक अहम भूमिका अदा किया की। इस रैली के ज़रिए यही बहुजन समाज फिर से मान्यवर कांशीराम के विचारों को फिर से जिंदा करने जा रहा है, मान्यवर कांशीराम के एक-एक विचार पूरे समाज के वोट बैंक को एक सूत्र में पिरोने का काम करते थे। कांशीराम जी समाज को इकट्ठा करने के लिए अक्सर कहा करते थे- एक झाड़ू की ताकत तब तक है, जब तक वह एक सूत्र में बंधी होती है, जिस दिन वह झाड़ू बिखर जाती, वह खुद कचरा बन जाती है, इसलिए झाड़ू की तरह संगठित रहिए कचरा न बने।

मान्यवर साहब काशीराम जी के 19वें महापरिनिर्वाण दिवस पर लखनऊ में बहुजन समाज पार्टी की यह रैली मायावती के एक आह्वान पर आने वाला जन सैलाब है, जिसने कहीं न कहीं पक्ष और विपक्ष खेमे में एक हलचल पैदा कर दी है। बीएसपी के इतिहास में इस रैली को अब तक की सबसे बड़ी रैली के तौर से देखा जा रहा है, वह भी ऐसे समय में जब बसपा सत्ता और राजनीतिक रूप से भी बहुत पिछड़ती हुई नज़र जा रही हैं। यह जन सैलाब बिना शोर शराब, जिसके लिए मीडिया में न कहीं कोई विज्ञापन, न कोई प्रचार हुआ। इसका सीधा संबंध बसपा रैली में आने वाले हर उस पार्टी समर्थक है, जो साहब कांशीराम जी की 19वीं पुण्यतिथि में शामिल होने के लिए लखनऊ पहुंचा।

बसपा संस्थापक मान्यवर कांशीराम द्वारा कमाई हुई उनकी सबसे बड़ी पूंजी है, जो उन्होंने बरसो तक बहुजन समाज को उनके हक और अधिकार के लिए सत्ता में भागीदारी दिलाने के लिए एक अहम भूमिका अदा किया की। इस रैली के ज़रिए यही बहुजन समाज फिर से मान्यवर कांशीराम के विचारों को फिर से जिंदा करने जा रहा है, मान्यवर कांशीराम के एक-एक विचार पूरे समाज के वोट बैंक को एक सूत्र में पिरोने का काम करते थे। कांशीराम जी समाज को इकट्ठा करने के लिए अक्सर कहा करते थे- एक झाड़ू की ताकत तब तक है, जब तक वह एक सूत्र में बंधी होती है, जिस दिन वह झाड़ू बिखर जाती, वह खुद कचरा बन जाती है, इसलिए झाड़ू की तरह संगठित रहिए कचरा न बने।

बसपा का पुराना कैडर, जो लंबे समय से बसपा से छिटका हुआ था। वह अब कहीं न कहीं फिर से पार्टी की छत्र-छाया में अपने आप को सुरक्षित महसूस करने के लिए उतावला है। कांशीराम जी के19वें महापरिनिर्वाण दिवस पर लखनऊ की सड़कों पर जो जन सैलाब उमड़ा, उसे दिहा दिखा दिया कि यह भीड़ पैसे देकर नहीं लायी गयी है, बल्कि वह खुद के खर्चे से चलकर लखनऊ पहुंचे है। जिसने बहुजन समाज की ताकत का फिर से एहसास कर दिया है। मान्यवर साहब कांशीराम जब भी लखनऊ में इस तरह की रैलिया किया करते थे। उस दौर में भी खूब जन सैलाब उमड़ता था। हालांकि उस दौर में मीडिया के ज्यादा संसाधन न होने के बावजूद कांशीराम के एक आवाहन पर रैली में जन सैलाब उमड़ पड़ता था।

अगर बहुजन समाज पार्टी के करीब पिछले 13 सालों पर नज़र डाले, तो बसपा का राजनीतिक ग्राफ धीरे-धीरे शिखर से शून्य तक जा पहुंचा है। या यूं कहे कि पार्टी इस वक्त सूखे का दंश झेल रही हैं। बसपा वर्ष 2012 के बाद से हर चुनाव में एकाएक अपना राजनीतिक जनाधार खोती जा रही है। उनका खुद का वोट बैंक भी झिटक कर समाजवादी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के खेमा जाता हुआ दिख रहा है। 15 मार्च 2020 को यूपी में भीम आर्मी चीफ चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी (असपा) के गठन के बाद से बीएसपी का वोटर अब कहीं न कहीं इस ओर झुकता हुआ नजर आने लगा है, जिससे बीएसपी की चिंता बढ़न लाजमी है। बहुजन समाज पार्टी अब ऐसे मुहाने पर खड़ी है, जहां उसके लिए दूर-दूर तक कोई आशा की किरण दिखती हुई नज़र नहीं आ रही हैं, या यूँ कहे बीएसपी इस वक्त अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। यूपी की सियासत में लंबे समय तक बसपा ने चार बार प्रदेश की कमान संभाली। मुख्यमंत्री के तौर पर मायावती ने बहुजन समाज की आवाज बनकर उनको सम्मान दिलाने का काम किया, लेकिन पार्टी का 2012 से ढलान में चले जाना, सोचने पर मजबूर देता है कि आखिर ऐसा क्या हुआ? कांशीराम के विचारों की राजनीतिक जमीन इतनी जल्दी धूमिल हो जाएगी। मान्यवर कांशीराम ने पार्टी के ज़रिए जो विचार समाज को दिए वह अब अमर हो गये। राजनीतिक विश्लेषकों का अब यहां तक मानना है कि बीएसपी मुखिया मायावती की वह चमक भी अब धूमिल होने लगी है, जिनके सितारे कभी यूपी की सियासत में चमक बिखेरते थे। हर विपक्ष पार्टी के लिए मायावती उस वक़्त नासूर बन चुकी थी।

आंबेडकरवादी चिंतक डॉ. सुनील कुमार सुमन इस रैली पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहते है कि बहुजन समाज पार्टी का एक बड़ा मास्टर स्टॉक हैं। बहुजन समाज पार्टी के लिए इस तरह का स्वतः स्फूर्त जन सैलाब कोई नई बात नहीं है। जब कभी बसपा की रैली आयोजित होती है, वंचित जनता का बेहिसाब हुजूम ऐसे ही उमड़ता रहा है। यह भारत के किसी पार्टी को नसीब नहीं। न किसी नेता को यह उपलब्धि हासिल है। सबको पता है कि रैलियों में पैसे पर लोग जुटाए जाते हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सभी रैलियाँ 'प्रायोजित' होती हैं। लेकिन बसपा की रैलियों में सुदूर गाँव-देहात से लोग अपने निजी प्रयासों से वैचारिक-राजनीतिक ऊर्जा लिए हुए पहुँचते हैं। ज़ाहिर है यह सब अम्बेडकरवाद की देन है। मान्यवर कांशीराम साहेब की कमाई है।

यह उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में बहन जी के रूप में एक दलित महिला के चार बार मुख्यमंत्री बनने का प्रताप है। लेकिन दुखद पक्ष यह है कि वैचारिक प्रभाव से उभरी यह राजनीतिक चेतना साहेब के असमय चले जाने से कुंद पड़ती गई। वरना देश में आज किसकी मजाल थी एक बुद्धिस्ट समाज के न्यायाधीश पर जूते उछाल दे। आज की यह भीड़ शोषित-पीड़ित आवाम की अपने नेता व पार्टी के लिए सच्ची प्रतिबद्धता है, जज़्बा है, समर्पण है। लेकिन इस वर्ग के नेता अपने लोगों के लिए इतने प्रतिबद्ध अब रह गए हैं। मुख्य सवाल अब यही है। लोग अभी भी नेतृत्वकर्ता की ईमानदारी, समर्पण और दूरदर्शिता की प्रतीक्षा में हैं। जरूरत है कि बहुजन वैचारिकी की विरासत को आगे ले जाया जाए और महापुरुषों के सपनों को साकार करने की दिशा में लगातार काम किया जाए, क्योंकि महज भावनाओं से न ताक़त बनेगी, न समाज आगे बढ़ेगा और न कभी सत्ता हासिल होगी। क्योंकि अभी नहीं तो कभी नहीं।

यूपी की सियासत अब किसी ओर अपना रुख बदलेगी यह कहना अभी बड़ा मुश्किल है। कयास अब यह भी लगाए जाने लगे हैं कि पार्टी के वो सभी पुराने चेहरे फिर से बसपा में शामिल सकते हैं, तो क्या यह मान लिया जाए कि बसपा अब एक नई मोड पर फील्डिंग करने जा रही है? आने वाले चुनाव में अभी दो साल बाकी हैं। ऐसे में बीएसपी को फिर से एक अग्निपरीक्षा से गुजरना होगा। अपने वोटर को मजबूत करने के लिए बसपा अभी से गाँव, शहर, गली-मोहल्ले में पार्टी कैडरों को एक्टिव करे, ताकि चुनाव तक आते-आते उनका वोटर कहीं छिटक न जाए। मान्यवर साहब ने इसी बहुजन समाज को इकठ्ठा करने के लिए, हजारों किमी की साइकिल यात्रा करके एक सूत्र में बांधकर रखा था, तो क्या 19 साल बाद अब फिर बहुजन समाज कांशीराम के विचार को फिर से जिन्दा करने जा रहा है? या यूँ कहें यही जन सैलाब वर्ष 2027 की स्क्रिप्ट लिखेगा?

ग्रीन हाइड्रोजन

कुमार सिद्धार्थ

लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं।

उम्मीद की रोशनी या हरे ईंधन का छलावा?

दुनिया जिस तीव्रता से जलवायु संकट की ओर बढ़ रही है, उसके बीच 'ग्रीन हाइड्रोजन' को एक ऐसे ईंधन के रूप में देखा गया जो भविष्य की ऊर्जा-व्यवस्था को नया स्वरूप दे सकता है – ऐसा स्रोत जो न तो प्रदूषण फैलाता है, न ही सीमित भंडारों पर निर्भर है। लेकिन जैसे-जैसे योजनाएँ धरातल पर आईं, यह सपना कठिन और महँगा साबित होने लगा। जो हाइड्रोजन पर्यावरण को बचाने का प्रतीक माना जा रहा था, वही अब तकनीकी जटिलताओं, भारी लागत और अनिश्चित नीतियों के बोझ तले हांफता दिख रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में ग्रीन हाइड्रोजन को लेकर जिस उत्साह की लहर उठी थी, वह अब थोड़ी ठंडी पड़ गई है। कई दिग्गज कंपनियाँ अपने प्रस्तावित प्रोजेक्टों से पीछे हटने लगी हैं।

रायटर्स की ताज़ा रिपोर्ट बताती है कि ब्रिटिश पेट्रोलियम ने ऑस्ट्रेलिया की 55 अरब डॉलर की विशाल परियोजना को रोक दिया, फोर्टेस्क्यू मेटल्स ग्रुप ने अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में अपने प्रयोग स्थगित कर दिए, और शेल जैसी ऊर्जा कंपनियाँ निवेश घटाने लगीं। इसका सबसे बड़ा कारण यही बताया गया कि उत्पादन लागत अभी भी बाजार के अनुकूल नहीं है। इससे न केवल 2030 के वैश्विक उत्सर्जन लक्ष्यों पर असर पड़ेगा, बल्कि ऊर्जा संक्रमण की गति भी धीमी पड़ जाएगी। ग्रीन हाइड्रोजन का सबसे बड़ा अवरोध इसकी लागत है। एक किलो ग्रीन हाइड्रोजन तैयार करने की कीमत 3.5 से 6 डॉलर के बीच आती है, जबकि परंपरागत ग्रे हाइड्रोजन केवल डेढ़ डॉलर प्रति किलो में उपलब्ध है। यही आर्थिक अंतर इसके विस्तार की राह में सबसे बड़ी रुकावट बना हुआ है।

ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन की प्रक्रिया सुनने में जितनी वैज्ञानिक लगती है, व्यवहार में उतनी ही जटिल है। इसमें पानी को इलेक्ट्रोलाइसिस द्वारा हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित किया जाता है, और इस प्रक्रिया के लिए भारी मात्रा में बिजली चाहिए। यदि यह बिजली सौर या पवन स्रोतों से न मिले, तो पूरा उद्देश्य ही अधूरा रह जाता है। इसके अलावा, प्रत्येक किलो हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए लगभग दस से तीस लीटर तक स्वच्छ जल चाहिए, जो जल-संकट झेल रहे देशों के लिए नई चुनौती है। तैयार हाइड्रोजन का भंडारण और परिवहन भी आसान नहीं, क्योंकि यह अत्यंत हल्की और ज्वलनशील गैस है, जिसे ऊँचे दबाव या अत्यधिक ठंडे तापमान पर सुरक्षित रखना पड़ता है। यानी तकनीक के हर चरण में खतरे और खर्च दोनों मौजूद हैं।

इन तमाम अड़चनों के बावजूद ग्रीन हाइड्रोजन का भविष्य पूरी तरह अंधकारमय नहीं है। दुनिया के कई देश अब भी इसे ऊर्जा-क्रांति की दिशा में पहला ठोस कदम मान रहे हैं। तकनीकी प्रगति और सरकारी प्रोत्साहनों से इसकी आर्थिकता में सुधार की संभावनाएँ हैं। ग्लोबल न्यूज वायर की रिपोर्ट बताती है कि 2030 तक उत्पादन लागत में 60-80 प्रतिशत तक की कमी संभव है। यदि यह घटकर 1-2 डॉलर प्रति किलोग्राम तक पहुँचती है, तो यह बाजार में जीवाश्म ईंधनों से प्रतिस्पर्धा कर सकेगी।

भारत के लिए यह चुनौती ही नहीं, अवसर भी है। देश अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का लगभग एक चौथाई हिस्सा आयातित पेट्रोलियम उत्पादों से पूरा करता है। यदि ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन बढ़े, तो इससे न केवल ऊर्जा-आयात पर निर्भरता घटेगी बल्कि औद्योगिक क्षेत्र को भी नई गति मिलेगी। इसी लक्ष्य के तहत भारत सरकार ने 2023 में 'राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन' की शुरुआत की। इस योजना का उद्देश्य 2030 तक पाँच मिलियन टन वार्षिक उत्पादन हासिल करना और भारत को इस क्षेत्र का वैश्विक केंद्र बनाना है।

देश में इस दिशा में शुरुआती प्रयोग पहले ही शुरू हो चुके हैं। लेह में एनटीपीसी ने विश्व की सबसे ऊँचाई पर हाइड्रोजन बसें चलाकर इतिहास रचा है। दिल्ली और फरीदाबाद में हाइड्रोजन बसों का ट्रायल सफल रहा है। चेन्नई की इंटीग्रल कोच फैक्ट्री में बनी हाइड्रोजन ट्रेन ने अपनी पहली परीक्षण यात्रा पूरी की है। इंडियन ऑयल और टोयोटा की 'मिराई' कार सड़कों पर उतर चुकी है। ये पहलें भले सीमित स्तर पर हों, लेकिन ये भारत की ऊर्जा नीति में दिशा परिवर्तन का संकेत देती हैं।

निजी क्षेत्र की कंपनियां रिलायंस, अदानी, टाटा पावर और एल एंड टी जैसी कंपनियाँ अरबों रुपये का निवेश घोषित कर चुकी हैं। आंध्र प्रदेश में शुरू होने वाली 35 हजार करोड़ रुपये की परियोजना देश की सबसे बड़ी ग्रीन हाइड्रोजन इकाई होगी, जहाँ पूरी प्रक्रिया सौर और पवन ऊर्जा से संचालित होगी। इस परियोजना का उद्देश्य केवल घरेलू मांग पूरी करना नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा के लिए भारत को तैयार करना है।

ग्रीन हाइड्रोजन को लेकर वैश्विक परिदृश्य फिलहाल विरोधाभासी है। एक ओर विकसित देश निवेश घटा रहे हैं, दूसरी ओर विकासशील देश – विशेषकर भारत – इसे अवसर के रूप में देख रहे हैं। फिर भी, कुछ बुनियादी सावधानियाँ बरतना अनिवार्य हैं। जल उपयोग पर सख्त निगरानी होनी चाहिए, ताकि हाइड्रोजन उत्पादन नए पर्यावरण संकट का कारण न बने। सुरक्षा मानकों का पालन सर्वोपरि हो, क्योंकि एक दुर्घटना पूरे क्षेत्र की विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकती है। साथ ही, इलेक्ट्रोलाइज़र जैसे उपकरणों का स्वदेशी निर्माण बढ़ाया जाए, ताकि तकनीकी निर्भरता कम हो और लागत नियंत्रित रहे।

ग्रीन हाइड्रोजन का भविष्य केवल आर्थिक गणनाओं पर नहीं, बल्कि पर्यावरणीय विवेक और तकनीकी नवाचार पर निर्भर करता है। यह दुनिया को जीवाश्म ईंधनों से दूर ले जाने की वह संभावना है जो समय के साथ साकार हो सकती है।

ग्रीन हाइड्रोजन का सफर फिलहाल कठिन और महँगा जरूर है, लेकिन यह असंभव नहीं। यह सिर्फ एक तकनीकी या औद्योगिक विकल्प नहीं, बल्कि मानवता के स्वच्छ भविष्य की अनिवार्यता है।

वयोवृद्ध कवि और तीस लाख..!

कटाक्ष

सुधीर देशपांडे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

ऊपर वाला वाकई बड़ा कलाकार हैं। देता है तो छप्पर फाड़कर देता है। इधर ये हुआ भी कि एक कवि को अचानक उसकी किताब की रायल्टी जिसे हम आगे मानधन कहेंगे, के नाम पर तीस लाख का चेक मिल गया। अब तीस लाख रुपए इतनी बड़ी रकम तो है नहीं, पर जिसे मिली है, उसका बुढ़ापा आराम से कट जाएगा, यह गारंटी जरूर है।

मुद्दा यह नहीं है। मुद्दा यह है कि जिन कवियों को प्रकाशक, पुस्तक छाप कर दें और वे उन्हीं से पैसा ले लें, जबसे यह खबर सुनी हैं तो उनके सीने पर साँप ही नहीं, बल्कि बड़े बड़े कोबरा, करैत और वाइपर लोटने लगे हैं। यही हुआ भी। जिस कवि को पैसा मिला, उसे वे लोग लानत मलामत भेजने लगे, जिन्हें आज तक एक कौड़ी का मानधन किसी प्रकाशक ने नहीं दिया। उन्हें सदमा इस बात का रहा कि उसे मिला तो फिर मुझे क्यों नहीं? उसे यह राशि कैसे मिली, किसने दी, उसके राजनीतिक पहुँच और परिणाम क्या होंगे। जो कवि जिंदगी भर वंचितों और आदिवासियों के लिए लड़ता रहा, उसके किए गये काम को तत्काल भुला दिया गया। जिंदगी भर जिनके लिए लड़ता रहा, वह अपने आखिरी दिनों में अपने लिए झुक गया, जबकि यह उम्र ही ऐसी होती है कि आदमी वैसे ही झुका हुआ दिखाई देता है, तो क्या हुआ? वस्तुतः साहित्यिकों की एक कौम ही ऐसी है, जिसे दूसरे का सुख दिखाई नहीं देता। वे अपने सुख में ही मगन है, इक्कीस सौ, पांच हजार की राशि खुद की जेब से देकर, खुद ही सम्मान बटोरने वाले, ऐसे लेखक, रचनाकार जब किसी दूसरे को बड़ा पुरस्कार मिलते देखते हैं तो अस्वस्थ हो ही जाते हैं।

सरकारें भी जो पुरस्कार चला रही है, उसमें इनके आका, अब नहीं रहे। जबकि यही लोग जो जिंदगी भर सरकार की निन्दा का दिखावा करते रहे, वे ही लोग अंततोगत्वा स्वयं को उसी सरकारी पुरस्कार का हकदार मानते रहे। हाँ, यह भी सही है कि कुछ ने सचमुच पुरस्कार नहीं लिए पर कुछ को पुरस्कार सचमुच नहीं मिला। जबकि हाथ पैर उन्होंने भी मारे थे। जुगाड़ उन्होंने भी लगाई थी। ये वे लोग हैं, जिन्हें पहचानना कठिन भी नहीं है। आखिर कभी पुरस्कार लौटाने वाले यही वे लोग थे, जिन्हें सरकारी पुरस्कार मिला था। अगर मिला न होता तो लौटाने के लिए इनके पास था ही क्या? अब उस बूढ़े व्यक्ति को भी तमाम पुरस्कार मिल चुके। बड़ी बात यह कि ख्याति भी महान कवि की मिली। पर होता है न जलन रखने वाला, विपक्ष में ही नहीं होता, बल्कि पक्ष में भी होता है। 'हमें अपनों ने लूटा, औरों में कहाँ दम था' वाली उक्ति उस बूढ़े कवि पर चिपक गई, जिसे उसकी किताबों की मानधन मिला, वरना कल तक तो वे उसी कवि को सर माथे लिए घूमते रहे। आज की तारीख में उसी कवि को मिली मानधन के पीछे का गणित समझने की कोशिश हो रही है। कितना पक्ष में लिखने के, कितना मुँह बंद रखने के, कितने फ्री के, कितने काम के।

उनका यह मानना भी सही है कि हिन्दी लेखकों की उतनी किताबें ही नहीं बिकती, जितनी वह प्रकाशक छापता है। उसका कहना है कि वह पुस्तक छापने भर का पैसा लेता है, बाकी का श्रम उसका ही है। जितनी पुस्तकें बिकी वह राशि उसकी, वैसे भी अब पुस्तकें पढ़ता कौन है? पर सवाल तो उठा है, किताबें कितने की बिकी होंगी। किताब की कीमत क्या रही होगी। पांच प्रतिशत से यदि मानधन मिला हो तो छः करोड़ की किताबें किसने खरीदी होगी? नहीं नहीं वे दस प्रतिशत लेते हैं। यानी तीन करोड़। माना कीमत छ सौ या हजार हो तो भी तीन से छः हजार किताबें बिकी होंगी। चलो मान लो बिक भी गई तो उन किताबों में ऐसा क्या था कि वे बिकीं। बस इस सवाल पर वे मौन धर लेते हैं। न इनको मालूम कि उन किताबों में क्या लिखा, न उनको मालूम। ये देखते ही रह गये और वो बूढ़ा आदमी तीस लाख का चेक लेकर चला गया, बयार की तरह।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पैरों में पड़े रहने वाले जूते क्लाइमेक्स पर

जूते हमेशा की तरह एक बार फिर चर्चा में है। जूते यूं तो पैर की शोभा है, मनुष्य की पर्सनैलिटी का मानक है।पैरों के रक्षक है। लेकिन जूते जब पैर से निकल कर सिर पर चढ़ाने की या फेकने की कोशिश की जाती है तो पैर की जूती माथे पर चढ़कर बोलती है तो चर्चा का विषय बन जाती है। वैसे जूता पैर में ही अच्छा लगता है,पैरों में पड़े रहने के बावजूद उनकी खासी इज्जत है। लेकिन जब पैर से निकलकर किसी के ऊपर जूते फेकें जाते हैं तो दूसरों की इज्जत को यह जूते पानी कर देते हैं। जब जूता पैर से निकाल कर कहीं भी किसी के ऊपर फेंका जाता है तो जूता राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहस विचार, सहानुभूति,आलोचना प्रशंसा का मुद्दा बन जाता है और हमेशा पैरों में पड़े जूते लोकप्रियता के क्लाइमेक्स को हासिल कर लेते हैं।

जूते व्यक्तित्व को निखारते हैं, ज्यादा दाम के जूते स्टेटस सिंबल भी होते हैं। जूते पैरों को बांधकर रखते हैं ताकि कदम डगमगाए नहीं लेकिन जब जूते के बंद खुलते हैं तब जूते एड़ी से बाहर होते हैं तो कदम तो ठीक दिमाग तक डगमगा जाते हैं।

जूते भी अपने आप को भारी समझते हैं यह छोटे-मोटे पर नहीं चलते और फेकें जाते हैं। जब बड़ों पर, सरमाएदारों पर, रसुखदारों पर, सेलिब्रिटीज पर ये फेकें जाते हैं या बरसते हैं तो जूते किसी के बूते के नहीं रह पाते हैं। जूते समझते कि हम किसी से कम नहीं है।

जिसे जिंदगी में कभी जूते नहीं पड़े वह अक्सर जूते फेकनें वालो की चर्चा से चूकते नहीं है। उधर जो बार-बार जूते खाते हैं मीडिया के कारण अपनी साख और लोकप्रियता भी बढ़ा लेते हैं। जूते सम भाव और सद्भावना वाले होते हैं। वह बिना किसी भेदभाव के बरसने के लिए आतुर रहते हैं वे यह नहीं देखते हैं कि उन्हें फेंकने पर झेलने वाला बड़ा है या छोटा, गरीब है या अमीर, साहब है या बॉस है,मातहत है या उच्च अधिकारी वे तो बस फेकें जाने की अपनी काबिलियत पर गर्व करते हैं।

पैरों में पड़े जूते की अपनी अलग ही इमेज है। देवालयों में आदमी एक नजर से भगवान को देखता है तो दूसरी नजर उन पर रहती है। जूते की सहेली चप्पल अपनी सफलता पर इतराती है। किसी की छेड़खानी पर तो वह अपने आप चलती है और छेड़ने वालों को रणछोड़ बना देती है। कहा जाता है की चप्पल,जूते बुरी ऊर्जा को सोख लेते हैं इस कारण सोखी गई ऊर्जा वाले जूते चप्पल,पनौती,के रूप में फेकें भी जाते हैं।इस पर जूते इतराते हुए यह कहते दिखते हैं कि किसी के सिर पर फेका जाऊ या पनौती के रूप में,हमारी फेंकने की अलहदा क्वालिटी है जिसका कोई तोड़ नहीं है।

जूते चप्पल ट्रकों बसों के आगे भी बुरी नजर से बचाने के लिए लटकते भी हैं। उल्टे चप्पल जूते माथे फटवा देते हैं। जब वाद-विवाद, माथा पच्ची,और लड़ाई झगड़े होते हैं तो कहा जाता है कि जूतम पैजार, मत करो।

जूते मुहावरों के भी मुंह लगे होते हैं। जब किसी को कहा जाता है कि यह फलॉ के जूते चाटता है तो माना जाता है कि वह चापलूसी और चुगलखोरी में अव्वल है ,किसी को अपमानित करने के लिए जूते देने जैसे शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। किसी से काम निकालना हो तो उसे चांदी का जूता देना ही कारगर होता है ।जो रिश्वत परिभाषित करता है। अपमान करने वाले भी किस्म किस्म के होते हैं जब कोई सीधे-सीधे अपमान नहीं करना चाहता है तो मखमली जूते की मार मारता है। बेरोजगार जब इधर-उधर भटकता है तो उसे बेमतलब जूते चटकाने वाला कहा जाता है। जूते, टोटके,में भी काम आते हैं और,दो टके, की इज्जत पर छोड़ने वाले भी होते हैं। जूते पवित्र पैर वाले चरणों में भी होते हैं, तो जूते दूल्हे के भी होकर अक्सर चुराए जाते हैं। सरकारें भी जूते को भेंट करती है ,तेंदू पत्ता भट्ट संग्रह करने वालों के सम्मान की योजना चलाती है और उन्हें जूते भेंट करती है। इसलिए जूते,जूते हैं और बगैर जूते के आदमी नंगे पैर होता है और फेके गए जूते इज्जतदार को नंगा किए बगैर नहीं मानते है!

मैं और मेरी मेज

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मुस्कुराता हूँ और शुक्रिया अदा करता हूँ

भारत के औपनिवेशिक - इतिहास में गोलमेज का खासा दखल और महत्व रहा है। रीत्यानुसार मेजें प्रायः काठ की होती हैं, मगर समय के साथ मेजों की दुनिया में धातुओं और पत्थरों का प्रवेश होता रहा। आधुनिक काल में प्लास्टिक, कांच और मिश्र धातुओं का चलन बढ़ा तो मेजें भी अछूती नहीं रहीं। देश-देशांतर में नायाब मेजें बनीं और खूब बनीं, ऐसी - ऐसी मेजें कि आप उन्हें देखें और रीझ जायें वक्त और जरूरत के मुताबिक मेजों के आकार-प्रकार यूं बदले कि उन्हें अलग-अलग खानों में वर्गीकृत किया जा सकता है। मेजों ने मुहावरों की दुनिया को भी छेंका। वे वार्ताओं, संधियों और बैठकों की गवाह बनीं। मैनर्स के बहाने वे तहजीब से जुड़ीं। कुर्सी उनकी जोड़ीदार हुई। कुर्सी और मेज संग साथ शब्दावली में रूढ़ हुये। यहां बात लेखकीय संदर्भों की हो रही है, तो यह नितांत सच है कि मेजों ने तख्तियों और तख्तों को बखूबी विस्थापित कर दिया और स्टडी रूम, अध्ययन कक्ष और लाइब्रेरियों की उनके बिना कल्पना ही मुहाल हो गया।

मित्रवर सूरज प्रकाश ने 'मैं और मेरी मेज़' पर लिखने का आग्रह किया। निश्चित ही उनका अभिप्राय लेखन प्रक्रिया और लेखक की जद्दोजहद से है, मगर मेज़ अनेक दिलचस्प संदर्भों के साथ मेरे ज़ेहन में आयत्त है, लिहाज़ा जद्दोजहद से पेश्तर कुछ बातें उसके बारे में कहूंगा और फिर विषय पर। मेजें अक्सर आयाताकार होती हैं। उनकी लंबाई-चौड़ाई यकसां नहीं होती। होने को वे वर्गाकार भी हो सकती हैं और गोलाकार भी। भारत के औपनिवेशिक -इतिहास में गोलमेज का खासा दखल और महत्व रहा है। रीत्यानुसार मेजें प्रायः काठ की होती हैं, मगर समय के साथ मेजों की दुनिया में धातुओं और पत्थरों का प्रवेश होता रहा। आधुनिक काल में प्लास्टिक, कांच और मिश्र धातुओं का चलन बढ़ा तो मेजें भी अछूती नहीं रहीं। देश-देशांतर में नायाब मेजें बनीं और खूब बनीं, ऐसी - ऐसी मेजें कि आप उन्हें देखें और रीझ जायें वक्त और जरूरत के मुताबिक मेजों के आकार-प्रकार यूं बदले कि उन्हें अलग-अलग खानों में वर्गीकृत किया जा सकता है। मेजों ने मुहावरों की दुनिया को भी छेंका। वे वार्ताओं, संधियों और बैठकों की गवाह बनीं। मैनर्स के बहाने वे तहजीब से जुड़ीं। कुर्सी उनकी जोड़ीदार हुई। कुर्सी और मेज संग साथ शब्दावली में रूढ़ हुये। यहां बात लेखकीय संदर्भों की हो रही है, तो यह नितांत सच है कि मेजों ने तख्तियों और तख्तों को बखूबी विस्थापित कर दिया और स्टडी रूम, अध्ययन कक्ष और लाइब्रेरियों की उनके बिना कल्पना ही मुहाल हो गया। लेखक के साथ राइटिंग टेबल आ जुड़ी। कल्पना करें तो अलग-अलग आकार-प्रकार की ऐसी राइटिंग टुबलों का कागजों, किताबों, पेपरवेट लैंपदान, डायरियों आदि के ढेर के बिना वजूद मुश्किल है। मेरी मान्यता है कि मेज़ से जुड़ने के लिए लेखक को सलीका और अपने भीतर कीमिया पैदा करना होता है।

स्मृति के गलियारे में हौले-हौले या तेज गति से चलकर जब मैं अपने बचपन में पहुंचता हूँ, तो स्वयं को गंगोजमुनी तहजीब के मरकज लखनऊ में गलियों और कुल्हियों के ठेठ मध्ययुगीन मोहल्ले छाछू कुआं में पाता हूँ। संयुक्त परिवार था। दादी, चाचा-ताऊ, भाई-बहन, मां और कुछ अन्य। नीचे दालान के बाहर बैठक थी और वहां कुर्सी मेज थी। वह हम बच्चों का पढ़ने का ठीहा था।

बुजुर्ग सरदार जी भाई और बहन को टयूशन पढ़ाने आती तो वहीं बैठते। मैंने बारहखड़ी वहीं सीखी और वहीं मेज पर तख्ती रखकर इमले का अभ्यास किया। खुशखत की आदत तभी पड़ी। तभी यह बोध उपजा कि अक्षर सुन्दर और सुवाच्य होने चाहिये। मेज पर पाटी रखकर सधे हाथों से चपल ऊंगलियों से सुंदर इबारत लिखना कला है और इस कला को सप्रयास साधना पड़ता है। मेरी कुछ मैत्रियां वर्षों के अंतराल में सघन और सान्द्र हुई हैं। कुछ की हस्तलिपि बड़ी सुंदर है और कुछ की बढेंगी। मित्र रमेश अनुपम की राइटिंग बड़ी सुन्दर है और वह फूल-पत्ती और लकीरों से पत्रों को और सुंदर आकर्षक बना देते हैं। दिल्ली छोड़कर मस्क्वा (रूस) जा बसे अनिल जनविजय के हरूफ भी बड़े-बड़े और सुंदर होते हैं। जब से आँख खुली है शीर्षक आत्मकथा से संप्रति खूब चर्चित लीलाधर मंडलोई के अक्षर सुस्पष्ट और सलीकेदार नहीं होते, लेकिन उन्हें बांचने में दिक्कत नहीं होती। बेहतरीन गद्य-लेखक तेजिंदर की हस्तलिपि का क्या कहना। मैं उसका मखौल उड़ाता और वह मेरी फब्तियों के मजे लेता। किसी चींटे को स्याही में डुबोकर कागज पर छोड़ दो तो टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियां बनेंगी और वे आकृतियां तेजिंदर की हस्तलिपि से मेल खाती होंगी। मेरी इस टिप्पणी पर तेजिंदर खूब हँसा करता था। मुझे लगता है कि गहरी संवेदना से ओतप्रोत तेजिंदर की तरल आत्मीयता से कागज पर उसके अक्षर डबडबा जाते होंगे। हस्तलिपि का संवेदनशीलता या आत्मीयता या मनःस्थिति से क्या वास्ता व रिश्ता है, यह शोध का विषय हो सकता है; दिलचस्प और मजेदार। लेखन और मेज में अन्योन्याश्रित संबंध है। वांग्मय में मेज का योगदान अतुल्य है। मित्रगण यहां मेज को व्यापक सन्दर्भों में लें। बिलाशक मेज पर बैठने के पहले तैयारी करनी होती है। मूड त्रिस्तरीय होता है। मेज के पहले, मेज पर और मेज के बाद। मेज के पहले यानि प्रीपरेटरी। रूसी में पदगतोवचिल्नीय। मेज पर यानि लिखते वक्त और मेज के बाद यानि लेखन के उपरांत। लिखने के लिये मेरी कुछ शर्तें हैं। कहें तो खब्त। कागज कोरा होना चाहिये। साइज ए फोर। जेके बॉन्ड हो तो अत्युत्तम। हाशिये का या रूलदार कागज तभी त्याग दिया था, जब बीती सदी की आठवीं दहाई के शुरूआती वर्षों में आगरा कॉलेज में विज्ञान में स्नातक का छात्र था। उसके पहले हम लोग नीली स्याही इस्तेमाल करते थे। वह कलम-दावात का दौर था। फिर बॉल पेन और रिफिल का दौर आया। उन्हीं दिनों हम कुछ मित्रों ने काली स्याही तथा ब्लैक रीफिल का प्रयोग शुरू किया, जो आज तक बदस्तूर जारी है। सफेद बुर्राक कागज पर काली स्याही खूब उभरती है। अक्षर भले लगते हैं। खूब सारे पेन और काली रिफिलें मेरा शगल हैं। काली रिफिल न हो तो मूड नहीं बनता। मेज की दराज में प्रायः उनका स्टाक रहता है; बफर स्टॉक। कागज भी थोक में। मेज पर

किताबों और डायरियों का ढेर। थोड़ा बेतरतीब। एक-दो पेपरवेट। एक ब्लैक स्टोन पेपरवेट बरसों से मेज की शोभा है। उसे मेरे पारिवारिक मित्र जशपुर राजपरिवार के दिलीप सिंह जूदेव ने गिफ्ट किा था, जब वह सांसद थे। स्याही या रोशनाई की बात चली तो प्रसंगवश यह जिक्र दिलचस्प है कि यशस्वी कथाकार मित्र शशांक हरी स्याही का उपयोग करते हैं। बहरहाल, मेज दिनचर्या में शुमार है। शायद ही कोई दिन जाता होगा, जब कुछ घंटे उसकी सोहबत में न बीतें। मेज बुलाती है। बाँधती है और मुक्त भी करती है। मुझे मेज पर बैठने के लिए तैयारी करनी होती है। यह तैयारी लेखन पूर्व की तैयारी होती है। साहित्रकारिता के तकाजे अलग-अलग होते हैं। कविता बहुधा कम समय लेती है।

अनुभूतियां जब सांद्र हो जाती हैं, उनका उद्रेक स्वाभाविक है। कविता की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं होती। कविता भावों या विचारों की संक्षिप्त और कलात्मक अभिव्यक्ति है। वह भाषा में आदमी होने की तमीज है। धूमिल का कहना सही है कि कविता समूचा आदमी चाहती है अपनी खुराक के लिए। यह बात कविता ही नहीं, अन्य विधाओं पर भी लागू होती है। लेखन तल्लीनता मांगता है। उसे एकाग्रता चाहिये। रचते समय वह 'ट्रांस' में रहता है। इर्दगिर्द से बेखबर। मेरे हाथ अक्सर होता है लिखने में गहरी तल्लीनता से चाय की प्याली ठंडी हो जाती है या पेग अनपिया रह जाता है। प्रसंगवश यह भी कि धूम्रपान का मुझे शौक नहीं। बैठकी से जब मनचाहा 'ड्राफ्ट' मिल जाता है तो वह सेलीब्रेशन से कम नहीं। पिछले ढाई सालों में जब भी लिखने बैठता हूं, मुझे अपनी जीवन संगिनी सरिता की कमी सालती है, जो नगीच बैठी रहती थी। फरमाइश पर चाय बना देती और पेग भी। वह मेरे लिखे की पहली पाठक हुआ करती थी। बहरहाल , लेखक कोई भी हो, वह व्यवधान, विघ्न-बाधा शोरोगुल से बचना चाहता है। कविता तो प्रतिकार है। प्रार्थना भी बखान भी। वक्तव्य भी। संकल्प भी। धिक्कार भी। यकीन भी। नेकी और बदी की लड़ाई में वह नेकी के साथ है और सत्य और असत्य तथा अंधकार ओर प्रकाश की मुसलसल जंग में सत्य और प्रकाश के साथ। कायसिन कुलियेव और रसूल गमजताव जैसे रचनाकार मुझे अच्छे लगते हैं। वे सुंदर निर्मल मन के लेखक हैं। कलुष उन्हें नहीं भाता। हम सबका सपना जीवन और जगत की बेहतरी का सपना है। मुक्तिबोध कहते है - 'सभी मानव सुखी, सुंदर व शोषणमुक्त कब होंगे।' यह वृहत्तर कवि कुल की जिज्ञासा और चिंता है। इस कुल का स्वप्न साझा स्वप्न है। वह चकमाओं, रोहिंग्याओं, तिब्बतियों रेड इंडियनों और फलस्तीनियों की पीड़ा से दुखी होता है। आज हम बोगदे में है। यह स्याह बोगदा है। बोगदे के सिरे पर रोशनी अभी दीखती नहीं। यह त्रासद और भयावह है। धार्मिक कट्टरता, अंध राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक दुराग्रहों ने विश्व के सम्मुख अभूतपूर्व संकट उत्पन्न कर दिया है। वैश्विक और मानवीय मूल्य संकट में हैं। चंडीदास के कथन 'सबार ऊपरे मानुष रे सत्य तहाँर ऊपरे किछुनाई के समक्ष समय ने प्रश्न चिन्ह जड़ दिया है। अकेला गांधी है, जो दोनों बाँह उठकर कहता है : 'सत्य ही ईश्वर है।' बापू का यह वाक्य हमेशा मेरे मनोमस्तिष्क में गूंजता कहता है कि सत्य ही ईश्वर ही। तब जब मैं मेज पर होता हूं और तब भी, जब मैं वहां नहीं होता तब भी। अच्छा लेखन तैयारी मांगता है। कवितेतर और कथेतर दोनों ही लेखन 'डिमांड' करते हैं। पत्रकारीय लेखन के अपने तकाजे हैं। अच्छे और प्रभावी लेखन के लिए तीन चीजें चाहिये : सन्दर्भ, भाषा और शिल्प। हर कहीं कंटेंट इज द किंग है। इसका कोई अपवाद नहीं। कंटेंट शिल्प तलाश लेता है। ओ हेनरी या अंतोन चेखोव की कहानियां पढ़िये। हेमिंग्वे का 'ओल्ड मैन एंड द' सी' पढ़िये। मिखाइल शोलखोव की 'इंसान का नसीबा' पढ़िये। ये सब अपने-अपने फन के माहिर उस्ताद है। मगर सोचिये कि उनमें यह फन आया कहां से? मेज पर जाने से पेश्तर वे वहां तक जाने की तैयारी कर चुके होते हैं। अच्छी रचना यूं ही नहीं जन्म लेती। येगोर इसायेव लंबी कविताओं का अदभुत कवि है। वह उस लाल सेना के अग्रिम दस्ते में था, जिसने नाजी फौजों को मात देकर बर्लिन में प्रवेश किया। मैं मस्क्वा जाकर उससे उसकी दाचा में मिला। उसने बेहतरीन लंबी कविताएं लिखी हैं। मैंने उसकी 'सुद पामिती' का अनुवाद किया।

शीर्ष दिया 'स्मृति गाथा'। कविता बाद में लिखी गयी। उसका जन्म तब हुआ था, जब येगोर बतौर फौजी लाम पर जूझ रहा था। 'कंसीव और डिलीवरी (गर्भधारण और प्रसव) के दरम्यान फासला होता है। धारण की अवधि कुछ भी हो सकती है। नौ मिनट भी। नौ माह भी। नौ साल भी। कभी-कभी हम लाख जतन कर भी मनचाह नहीं लिख पाते। मेज पर हम डिलीवर करते हैं। वह विरेचन का ठौर है। वहां हम मुक्त होते हैं। वहां हमें बेचैनी की फांस से मुक्ति मिलती है। मैं अपनी मेज का शुक्रगुजार हूं। जिंदगी में शहर बदले। मकान बदले, लेकिन मेरे कमरे में मेज आज भी वही है। मेरा लिखना उसके होने से मुमकिन हुआ। वह अभी भी मुझे उकसाती है। मैं मुस्कुराता हूं और उसका शुक्रिया अदा करता हूँ।'

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर विशेष

संध्या राजपुरोहित

लेखक आदिवासी अंचल में शिक्षकों व आदिवासी बच्चों के साथ जीवन कौशल शिक्षा के कार्य से सम्बद्ध है।

संकटों से जूझती, उम्मीदों को गढ़ती बालिकाएं

11 अक्टूबर, अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस, केवल कैलेंडर पर दर्ज एक तिथि नहीं है, यह वह दिन है जब पूरी दुनिया उन बालिकाओं को सलाम करती है जो तमाम बाधाओं के बावजूद अपने अस्तित्व और अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह दिन हर उस लड़की के नाम है, जो अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करना चाहती है, जो किसी के कहने पर नहीं बल्कि अपने विवेक पर आगे बढ़ना जानती है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस का कथन है कि 'हर लड़की, हर जगह, समानता, अवसर और सम्मान की हकदार है।' इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस इसी भावना को आगे बढ़ाता है। वर्ष 2025 की थीम है – 'मैं जो लड़की हूं, मैं जो बदलाव लाती हूं: संकट के अग्रिम मोर्चे पर लड़कियां।' यह थीम केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि उस जीवंत हक़ीक़त का प्रतीक है, जिसमें दुनिया की लाखों लड़कियाँ अपने साहस और संकल्प से नए इतिहास लिख रही हैं। वे किसी बेहतर कल की प्रतीक्षा नहीं कर रहीं, बल्कि उसे स्वयं गढ़ रही हैं।

बीते तीन दशकों में, जबसे बीजिंग घोषणा-पत्र ने महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों की बात की थी, बहुत कुछ बदला है, लेकिन बहुत कुछ अभी बाकी भी है। बीजिंग की वह पुकार आज भी गूंजती है कि समाज केवल समानता की बातें न करे, बल्कि उसे जीना सीखे। आज भी संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट बताती है कि 133 मिलियन लड़कियाँ स्कूल से बाहर हैं। चार में से एक किशोरी ने अपने साथी द्वारा हिंसा का अनुभव किया है, और तीन में से एक किशोर यह मानता है कि कुछ परिस्थितियों में पत्नी को मारना उचित है। ये आंकड़े केवल भौगोलिक या आर्थिक अंतर नहीं दिखाते, बल्कि उस मानसिकता को उजागर करते हैं जो अब भी बराबरी के विचार से दूर है।

भारत भी इस वैश्विक परिदृश्य का हिस्सा है। यहां 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाओं ने समाज में नया संवाद आरंभ किया, लेकिन नीतियाँ तभी प्रभावी होती हैं जब उनके साथ सोच में भी बदलाव आए। भारत के ग्रामीण और अर्धशहरी इलाकों में आज भी बाल विवाह, शिक्षा में असमानता और बाल श्रम जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, 15 से 19 वर्ष की 23 प्रतिशत किशोरियाँ न तो शिक्षा में हैं, न प्रशिक्षण में, न ही किसी रोजगार में। कई राज्यों में अब भी 20 प्रतिशत से अधिक बालिकाएँ वयस्क होने से पहले विवाह के बंधन में बंध जाती हैं। यह स्थिति हमें यह सोचने पर विवश करती है कि सामाजिक बराबरी केवल कानून या योजना से नहीं, बल्कि दृष्टिकोण के परिवर्तन से आती है।

इसके बावजूद, भारत की धरती ने हमेशा उम्मीद की नई कहानियाँ गढ़ी हैं। बिहार की सृष्टि गोयल जैसी छात्राएँ पर्यावरण संरक्षण की अग्रदूत बनी हैं। राजस्थान की किशोरियों ने बाल विवाह को रोकने के लिए अपने परिवारों तक से टकराने का साहस दिखाया। झारखंड की

लड़कियाँ फुटबॉल के मैदानों में देश का नाम रोशन कर रही हैं। ये कहानियाँ इस बात का सबूत हैं कि बदलाव की नदियाँ अब रुकने वाली नहीं हैं, चाहे राह कितनी भी कठिन क्यों न हो।

यूनेस्को के अनुसार, यदि सभी लड़कियों को माध्यमिक शिक्षा मिल जाए, तो बाल विवाह की दर आधी रह जाएगी और मातृ मृत्यु दर में 70 प्रतिशत तक कमी आएगी। भारत में शिक्षा की पहुँच तो बढ़ी है, पर अब भी गुणवत्ता और निरंतरता की चुनौतियाँ हैं। कई ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियाँ इसलिए स्कूल छोड़ देती हैं क्योंकि वहाँ शौचालय नहीं हैं या रास्ते असुरक्षित हैं। कहीं उन्हें घर के कामों या भाइयों की पढ़ाई के लिए अपनी शिक्षा छोड़नी पड़ती है। लेकिन यह संतोष की बात है कि अब भारत की नई पीढ़ी की लड़कियाँ चुप नहीं हैं। वे आत्मविश्वास के साथ हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं – विज्ञान, खेल, कला, तकनीक या राजनीति – हर जगह उनका योगदान दिखाई दे रहा है।

यही वह दिशा है, जिसकी पुष्टि यूनिसेफ की 'किशोरी बालिका कार्यक्रम रणनीति 2022-2025' भी करती है। यह रणनीति बताती है कि यदि हमें सतत विकास के लक्ष्यों को साकार करना है, तो हमें किशोरियों को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि परिवर्तन की अग्रदूत मानना होगा। यूनिसेफ के अनुसार, हर किशोरी को स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, जीवन-कौशल, और हिंसा व भेदभाव से सुरक्षा का अधिकार है और यह तभी संभव है जब उनके साथ जुड़कर, उनके अनुभवों और आकांक्षाओं को समझते हुए कार्यक्रम बनाए जाएँ।

यह रणनीति दुनिया भर में किशोरियों के नेतृत्व, आत्मनिर्भरता और भागीदारी को केंद्र में रखने का आह्वान करती है। यूनिसेफ का यह दृष्टिकोण भारत जैसे देशों के लिए भी दिशा देता है, जहाँ युवा जनसंख्या बड़ी है और परिवर्तन की ऊर्जा इन्हीं किशोरियों में सबसे अधिक निहित है। यदि हम इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित वातावरण दें, तो ये लड़कियाँ केवल अपना भविष्य नहीं, बल्कि समाज और देश का भविष्य भी गढ़ेंगी।

आज ज़रूरत है कि हम लड़कियों को केवल 'सशक्त करने' की बात न करें, बल्कि उन्हें निर्णय-प्रक्रिया का हिस्सा बनाएं। उन्हें मंच दें, विश्वास दें, ताकि वे अपने समुदायों के निर्णयों में अपनी आवाज़ रख सकें। नीतियाँ केवल सुरक्षा या शिक्षा तक सीमित न रहें, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, कौशल विकास और नेतृत्व के अवसरों को भी प्राथमिकता दें। सक्षम जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के जरिये किशोरी बालिकाओं को विभिन्न प्रकार के कौशलों को विकसित करने की पहल हो रही है। वहीं स्कूलों में 'गर्ल लीडर क्लब' या पंचायत स्तर पर 'बालिका मंच' जैसे प्रयोग लड़कियों को संवाद और दिशा देने के अवसर बन सकते हैं।

जब हम एक लड़की की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान में निवेश करते हैं, तो हम केवल उसका नहीं, पूरे समाज का भविष्य बदलते हैं। एक लड़की की सफलता उसके परिवार, समाज और देश की प्रगति का संकेत है। इसलिए, इस अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर यह याद रखना चाहिए कि लड़कियाँ बदलाव का इंतज़ार नहीं करतीं - वे खुद बदलाव हैं। उनकी हर मुस्कान, हर कोशिश और हर कदम, इस धरती को एक नई रोशनी से भर देता है।

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

समाज में परिवर्तन की वाहक बनें बालिकाएं

आज अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित एक अंतर्राष्ट्रीय पालन दिवस है। 11 अक्टूबर 2012 को पहली बार बालिका दिवस मनाया गया था। तब से हर वर्ष 11 अक्टूबर को पूरी दुनियां में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस दुनिया भर में लड़कियों द्वारा उनके लिंग के आधार पर सामना की जाने वाली लैंगिक असमानता के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। इस असमानता में शिक्षा, पोषण, कानूनी अधिकार, चिकित्सा देखभाल और भेदभाव से सुरक्षा, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और जबरन बाल विवाह जैसे क्षेत्र शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस 2025 की थीम है मैं लड़की हूं, मैं बदलाव का नेतृत्व करती हूं। संकट की अग्रिम पंक्ति में लड़कियां। यह थीम संकट की परिस्थितियों में लड़कियों की दृढ़ता, नेतृत्व और सशक्त भूमिका पर केंद्रित है। यह थीम उन चुनौतियों पर प्रकाश डालती है जिनका सामना बालिकाएं करती हैं। जैसे संघर्ष, जलवायु परिवर्तन और असमानताएं। यह थीम बालिकाओं को केवल संकट के शिकार के रूप में नहीं बल्कि परिवर्तन के वाहक के रूप में पहचानने पर जोर देती है। यह थीम शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा में निवेश का आह्वान करती है ताकि वे बेहतर और समावेशी दुनिया का निर्माण कर सकें। आज हर क्षेत्र में बालिकाओं के आगे बढ़ने के बावजूद भी वह अनेकों कुरीतियों की शिकार हैं। ये कुरीतियों उनके आगे बढ़ने में बाधाएं उत्पन्न करती है। पढ़े-लिखे लोग और जागरूक समाज भी इस समस्या से अछूता नहीं है। देश में आज भी प्रतिवर्ष लाखों लड़कियों को जन्म लेने से पहले ही कोख में मार दिया जाता है। आज भी समाज के अनेक घरों में बेटा, बेटी में भेद किया जाता है। बेटियों को बेटों की तरह अच्छा खाना और अच्छी शिक्षा नहीं दी जाती है। समाज में आज भी बेटियों को बोझ समझा जाता है।

भारत में हर साल तीन से सात लाख कन्या भ्रूण नष्ट कर दिये जाते हैं। इसलिए यहां महिलाओं से पुरुषों की संख्या 5 करोड़ ज्यादा है। समाज में निरंतर परिवर्तन और कार्य बल में महिलाओं की बढ़ती भूमिका के बावजूद रूढ़ीवादी विचारधारा के लोग मानते हैं कि बेटा बुढ़ापे का सहारा होगा और बेटी हुई तो वह अपने घर चली जायेगी। बेटा अगर मुखाग्नि नहीं देगा तो कर्मकांड पूरा नहीं होगा।

पिछले कुछ वर्षों में देश में जन्म के समय लिंगानुपात में बढ़ोतरी होना शुभ संकेत हैं। संसद में एक सवाल का जवाब में महिला एवं बाल विकास मंत्री ने बताया था कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना ने बालिकाओं के अधिकारों को स्वीकार करने के लिए जनता की मानसिकता को बदलने की दिशा में सामूहिक चेतना जगाई है। यह राष्ट्रीय स्तर पर जन्म के समय लिंग अनुपात (एसआरबी) में 12 अंकों के सुधार के रूप में परिलक्षित होता है। जो कि 2014 में 918 था। जबकि 2023-24 में 12 अंक बढ़कर 930 हो गया। हमारे देश में यह एक बड़ी विडंबना है कि हम बालिका का पूजन तो करते हैं। लेकिन जब हमारे खुद के घर बालिका जन्म लेती है तो हम दुखी हो जाते हैं। देश में सभी जगह ऐसा देखा जा सकता है। देश के कई प्रदेशों में तो बालिकाओं के जन्म को अभिशाप तक माना जाता है। लेकिन बालिकाओं को अभिशाप मानने वाले लोग यह क्यों भूल जाते हैं कि वह उस देश के नागरिक हैं जहां रानी लक्ष्मीबाई जैसी विरांगनाओं ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

हमारे यहां आज भी बेटी पैदा होते ही उसकी परवरिश से ज्यादा उसकी शादी की चिन्ता होने लगती है। आज महंगी होती शादियों के कारण बेटी का बाप हर समय इस बात को लेकर चिंतित नजर आता है कि उसकी बेटी की शादी की व्यवस्था कैसे होगी। समाज में व्याप्त इसी सोच के चलते कन्या भ्रूण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। कोख में कन्याओ को मार देने के कारण समाज में आज लड़कियों की काफी कमी होने से लिंगानुपात गड़बड़ा गया है। अगर समाज में बेटियों को

> *अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस 2025 की थीम है मैं लड़की हूं, मैं बदलाव का नेतृत्व करती हूं। संकट की अग्रिम पंक्ति में लड़कियां। यह थीम संकट की परिस्थितियों में लड़कियों की दृढ़ता, नेतृत्व और सशक्त भूमिका पर केंद्रित है। यह थीम उन चुनौतियों पर प्रकाश डालती है जिनका सामना बालिकाएं करती हैं। जैसे संघर्ष, जलवायु परिवर्तन और असमानताएं। यह थीम बालिकाओं को केवल संकट के शिकार के रूप में नहीं बल्कि परिवर्तन के वाहक के रूप में पहचानने पर जोर देती है। यह थीम शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा में निवेश का आह्वान करती है ताकि वे बेहतर और समावेशी दुनिया का निर्माण कर सकें।*

उचित शिक्षा और सम्मान मिले तो बेटियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहेगी। इसलिए यदि यह कहा जाय की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना नही हम सबकी एक जिम्मेदारी है तो इसमें कुछ गलत नही है। यदि हम सभी एक अच्छे समाज का निर्माण करना चाहते है तो हम सबका यही फर्ज बनता है हम बेटियों को भी भयमुक्त वातावरण में पढ़ाये। उन्हें इतना सशक्त बनाये की खुद गर्व से कह सके की देखो वह हमारी बेटी है जो इतना बड़ा काम कर रही है।

आज लड़कियां लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। कठिन से कठिन कार्य लड़किया सफलतापूर्वक कर रही हैं। देश में हर क्षेत्र में महिला शक्ति को पूरी हिम्मत से काम करते देखा जा सकता है। लड़कियों ने अपने काम और समर्पण के दम पर कई क्षेत्रों और क्षेत्रों में खुद को साबित किया है। वे अधिक प्रतिभाशाली, आज्ञाकारी, मेहनती और परिवार और अपने जीवन के लिए जिम्मेदार हैं। लड़कियां अपने परिवार और माता-पिता के प्रति अधिक देखभाल करने वाली और प्यार करने वाली होती हैं और वे हर काम में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देती हैं। देश की अर्थव्यवस्था में भी महिलाओं का अहम योगदान है। वे श्रम शक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और व्यवसायों की वृद्धि और विकास में योगदान देती हैं।

एक तरफ जहां बेटी को जन्मते ही मरने के लिये लावारिश छोड़ दिया जाता है। वहीं झुंझुनू जिले की मोहना सिंह जैसी बालिकायें भी है जो आज देश में फाईटर प्लेन उड़ा कर पूरे देश में जिले का मान बढ़ा रही हैं। समाज में सभी को मिलकर लडका-लडकी में भेद नहीं करने व समाज के लोगों को लिंग समानता के बारे में जागरूक करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। देश में बालिकाओं के साथ हर दिन बलात्कार, प्रताड़ना की घटनायें अखबारों की सुर्खियां बनती हैं। बालिकायें कही भी अपने को सुरक्षित नहीं समझती हैं। चाहे घर हो या स्कूल अथवा कार्य स्थल। हर जगह वहशी भेड़िये उन पर नजरे गड़ायें रहते हैं। उन्हे जब भी मौका मिलता है नोंच डालते हैं। ऐसे माहौल में देश की बालिकायें कैसे आगे बढ़ पायेगीं।

समाज के पढ़े-लिखे लोगों को आगे आकर कन्या भ्रूण हत्या जैसे घिनोने कार्य को रोकने का माहौल बनाना होगा। ऐसा करने वाले लोगों को समझा कर उनकी सोच में बदलाव लाना होगा। लोगों को इस बात का संकल्प लेना होगा कि ना तो गर्भ में कन्या की हत्या करेगें ना ही किसी को करने देगें। तभी देश में कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लग पाना संभव हो पायेगा। सरकार व समाज को मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करने का प्रयास करना चाहिये जिसमें बालिकायें खुद को महफूज समझ सकें। समाज और राष्ट्र के विकास के लिए बालिकाओं के महत्व को स्वीकार करना और बढ़ावा देना आवश्यक है।

हम सभी जानते हैं कि एक लड़की समाज के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। वह एक मा, एक बेटी, एक पत्नी इस तरह कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती है। उसे घर की शांति बनाए रखने वाली स्तंभ माना जाता है और फिर भी उसका अपमान किया जाता है। स्त्रियां ही संतति की परम्परा में मुख्य भूमिका निभाती है फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियां उपेक्षित ही रही है। हमारे समाज का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज अपनी बच्चियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और उन्हें कितना महत्व देते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कानूनी सुरक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण के माध्यम से बालिकाओं को सशक्त बनाना न केवल एक नैतिक दायित्व है बल्कि सामाजिक विकास के लिए एक जरूरी आवश्यकता भी है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि लड़कियों को आगे बढ़ने, सीखने के समान अवसर मिले। तभी हम एक संतुलित, न्यायसंगत और समृद्ध समाज बना सकेगें।

इतिहास के ज्ञान से ही विषम परिस्थिति में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भरत मिलाप कार्यक्रम में शामिल हुए

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि इतिहास का ज्ञान होने पर ही हम विषम परिस्थिति में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे। सनातन की पुर्नस्थापना से देश को मजबूत करने का वातावरण चल रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल पद्मधर पार्क रीवा में भरत मिलाप कार्यक्रम में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गौरवशाली नेतृत्व में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ और सनातन की पुर्नस्थापना हुई। कोठारी बंधुओं के बलिदान से मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्होंने दशहरा उत्सव समिति द्वारा प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते हुए दशहरा एवं भरत मिलाप कार्यक्रम आयोजन के लिए साधुवाद दिया तथा अपेक्षा की कि आगे भी यह कार्यक्रम कुशलतापूर्वक परंपरा अनुसार संचालित होते रहेंगे।

कार्यक्रम में कलाकारों द्वारा अयोध्या में राम मंदिर निर्माण को भाव विभोर करने वाली मंचीय प्रस्तुति की उप मुख्यमंत्री जी ने सराहना करते हुए कहा कि इस प्रस्तुति से उपस्थित लोग अभिभूत हुए। उप मुख्यमंत्री ने श्रीराम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न के स्वरूप का पूजन किया। इस अवसर पर कलाकारों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्ता, महामंत्री राजेश पाण्डेय, मैहरधाम के पुजारी श्री पवन महराज सहित दशहरा उत्सव समिति के पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में स्थानीय जन उपस्थित रहे।

कुन्बी समाज मंगल भवन में आज लगेगा नि:शुल्क कैंसर जांच शिविर

बैतूल। स्वास्थ्य की सुरक्षा और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाव के लिए लायंस क्लब बैतूल सिटी और एचसीजी कैंसर सेंटर नागपुर द्वारा एक दिवसीय नि:शुल्क कैंसर जांच शिविर का आयोजन शनिवार 11 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक कुन्बी समाज मंगल भवन इटारसी रोड, सदर बैतूल में आयोजित किया जाएगा। लायंस क्लब के अध्यक्ष बीआर कुबड़े ने बताया कि शिविर में अनुभवी फिजीशियन डॉ. सोनम साहू स्तन कैंसर की जांच और परामर्श प्रदान करेंगी। उनके साथ मनोवैज्ञानिक और कैंसर काउंसलर डॉ. कमलजीत कौर भी मौजूद रहेंगे, जो मुख कैंसर स्कैनिंग और एचपीवी टीकाकरण मार्गदर्शन देंगे। शिविर में निःशुल्क स्तन कैंसर जांच एवं परामर्श, मुख स्कैनिंग और परामर्श, ब्लड प्रेशर जांच, शुगर जांच, तथा एचपीवी टीकाकरण और मार्गदर्शन की सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। विशेष रूप से इस शिविर के लाभार्थियों के लिए महिला एवं पुरुष कैंसर स्क्रीनिंग पैकेज पर विशेष रियायती दरें भी रखी गई हैं। लायंस क्लब बैतूल सिटी की यह पहल समाज में कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने और शुरुआती चरण में बीमारी की पहचान के उद्देश्य से की जा रही है। आयोजन समिति ने बताया कि इस निःशुल्क जांच शिविर में भाग लेने के लिए पंजीयन अनिवार्य है। इस सेवा अभियान में लायंस ऑफ बैतूल का भी सहयोग रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के रतलाम के बिजली आगमन पर नागरिकों और विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने जोरदार आत्मीय अभिनंदन किया।

भोपाल से डॉक्टर देती रहीं कमांड, आगरा में रोबोट ने की बच्चेदानी की सफल सर्जरी

भोपाल (नप्र)। भोपाल से आगरा तक ऑपरेशन... डॉक्टर नहीं गए, लेकिन सर्जरी पूरी हो गई। यह सुनकर आपको हैरानी होगी, लेकिन यह सच है। दुनिया की पहली टेली-रोबोटिक रेसीप्रोकल सर्जरी से मेडिकल साइंस में नया इतिहास रच दिया गया। यह कारनामा भोपाल की स्त्री रोग विशेषज्ञ और रिप्रोडक्टिव मेडिसिन एक्सपर्ट डॉ. प्रिया भावे चित्तावर ने कर दिखाया। उन्होंने भोपाल से 440 किमी दूर आगरा में महिला मरीज की हिस्ट्रेक्टॉमी (बच्चेदानी निकालने की सर्जरी) बिना अस्पताल गए पूरी कर दी। उसी दिन आगरा के एक डॉक्टर ने भोपाल की महिला मरीज की प्रोलैप सर्जरी की। यह प्रयोग रेसीप्रोकल सर्जरी कहलाया। इसे दुनिया की पहली टेली-रोबोटिक रेसीप्रोकल सर्जरी के रूप में दर्ज किया गया। इस

सर्जरी के लिए दोनों शहरों के अस्पतालों में अत्याधुनिक टेली-रोबोटिक सिस्टम लगाए गए थे, जिन्हें पीयर-टू-पीयर नेटवर्क से जोड़ा गया। बुधवार को आयोजित कॉन्फ्रेंस में डॉ. प्रिया ने इस ऐतिहासिक प्रयोग की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि यह चिकित्सा जगत के लिए एक नए युग की शुरुआत है।

स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रिया 440 किमी दूर थ्रीडी स्क्रीन से देती रहीं कमांड-सुबह 10:00 बजे- भोपाल में ऑपरेशन थिएटर तैयार: हर हेल्थ हॉस्पिटल, भोपाल का ऑपरेशन थिएटर गुरुवार को कुछ अलग दिख रहा था। सामने 3डी स्क्रीन, बगल में था हाई-टेक रोबोटिक सर्जिकल सिस्टम। डॉ. प्रिया ने कंट्रोल कंसोल संभाला और स्क्रीन पर आगरा की मरीज दिखाई देने लगीं। 10:05 बजे- कैमरा इन कमांड और आगरा में रोबोट की त्वरित प्रतिक्रिया: जैसे ही उन्होंने पहला कमांड दिया, आगरा के ऑपरेशन थिएटर में रोबोटिक आर्म ने वैसा ही मूवमेंट किया। मानो दोनों एक ही जगह हों। यह दृश्य देखकर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद सभी दंग रह गए। 10:10 बजे- सटीक कट: डॉ. प्रिया की गाइडेंस में रोबोट ने हिस्ट्रेक्टॉमी शुरू की। हर मूवमेंट माइक्रो सेकंड में ट्रांसफर हो रहा था - बिना किसी लैग के। 10:35 बजे- सर्जरी का निर्णायक क्षण: अब ब्लैडर को अलग करें- डॉ. प्रिया की कमांड पर आगरा की टीम ने सटीकता से प्रोसिजर आगे बढ़ाया। स्क्रीन पर ब्लैडर की नसें और टिश्यूज साफ दिखाई दे रहे थे। 11 बजे- सर्जरी सफल, ओटी तालियों से गूंज उठा: 45 मिनट में सर्जरी पूरी हुई। मरीज पूरी तरह स्थिर थी। उसी समय आगरा की टीम ने भोपाल के मरीज की सर्जरी की और वह भी सफल रही। यह पहला अवसर था जब दो शहरों के डॉक्टरों ने एक-दूसरे के मरीजों पर सफल रिमोट सर्जरी की।

रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेला 16 अक्टूबर को

बैतूल। युवा संगम कार्यक्रम के अंतर्गत जिला रोजगार कार्यालय, जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र तथा शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बैतूल के संयुक्त तत्वावधान में रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेला 16 अक्टूबर बुधवार को प्रात: 11 बजे से सायं 4 बजे तक शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था भीमपुर में आयोजित होगा। इस मेले में बेरोजगार युवक-युवतियों के लिए विभिन्न निजी कंपनियों द्वारा भर्ती एवं प्राथमिक चयन प्रक्रिया की जाएगी।

किसानों को मिले उचित दाम, सोयाबीन किसानों की मदद के लिए सरकार तत्काल राहत पैकेज की घोषणा करे : जीतू पटवारी

आष्टा। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी जी आज सीहोर जिले के आष्टा मंडी पहुंचे, जहाँ उन्होंने सोयाबीन किसानों से मुलाकात की और उनकी समस्याएँ सुनीं। श्री पटवारी ने कहा कि प्रदेश के किसान आज भयंकर आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं - फसल चौपट हो चुकी है, बीमा कंपनियों ने हाथ खड़े कर दिए हैं, और सरकार अब तक राहत देने में विफल रही है।

उन्होंने मुख्यमंत्री मोहन यादव और भाजपा सरकार पर तीखा प्रहार करते हुए कहा मुख्यमंत्री जी और भाजपा नेताओं ने पूरे प्रदेश में 'भावांतर उत्सव' मनाया, लेकिन जब किसानों की सोयाबीन की खरीदी ही नहीं हुई, तो कैसा भावांतर और किस चीज़ का जश्न मना रहे हैं? प्रदेशभर में सोयाबीन 3500 में बिक रही है, ऐसे में रू. 5328 के भावांतर की बात सिर्फ भ्रम फैलाने जैसा है।

श्री पटवारी ने कहा कि सीहोर, जो पूर्व मुख्यमंत्री और वर्तमान कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का जिला है, वहाँ भी किसानों की हालत बेहद खराब है। उन्होंने कहा मुख्यमंत्री जी, जब फसल ही नहीं हुई है, बीमा कंपनियाँ पल्ला झाड़ चुकी हैं, तो किसानों को राहत देने के लिए सरकार को 20,000 प्रति बीघा किसानों के खाते में तत्काल डालना चाहिए।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि हाल के अत्यधिक वर्षा और बाढ़ से किसानों की बची-खुची फसल भी नष्ट हो गई है। उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि किसानों के हित में विशेष कैबिनेट बैठक बुलाई जाए और राहत पैकेज की घोषणा की जाए।

यह कांग्रेस या भाजपा का राजनीतिक विषय नहीं है, यह किसानों के जीवन और सम्मान का विषय है

उन्होंने आगे कहा कि न प्याज का दाम है, न लहसुन का, बीज महंगे हैं और किसान साहूकारों से कर्ज लेकर खेती कर रहा है। ऐसे हालात में सरकार का मौन रहना किसानों के साथ अन्याय है।इस अवसर पर किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह चौहान, पूर्व विधायक शैलेंद्र पटेल, जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजीव गुजराती, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष कैलाश परमार, प्रदेश प्रवक्ता राहुल राज, कांग्रेस नेता ओम पटेल, एवं समस्त स्थानीय कार्यकर्ता और कांग्रेस नेता उपस्थित रहे।

भावान्तर योजना-5 दिनों में 2339 किसानों ने कराया पंजीयन

बैतूल। भावांतर भुगतान योजना के प्रति किसानों में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। योजना प्रारंभ होने के पांच दिनों में ही 2339 किसानों ने पंजीयन कराकर शासन की इस किसान हितैषी योजना पर अपना विश्वास जताया है। गत वर्ष कुल 3256 किसानों ने सोयाबीन उपार्जन के लिए पंजीयन कराया था। इस वर्ष की शुरुआत में ही बड़ी संख्या में किसानों का जुड़ना योजना की लोकप्रियता और प्रभावशीलता को दर्शाता है। उप संचालक कृषि आनंद कुमार बड़ोनिया ने जानकारी देते हुए बताया कि जिले में 92 हजार 937 हेक्टेयर क्षेत्र में सोयाबीन की फसल ली जा रही है। सभी पात्र किसानों को योजना का लाभ मिल सके, इसके लिए जिला प्रशासन द्वारा व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। जिला एवं मंडी स्तर पर अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, किसान प्रतिनिधियों और मंडी व्यापारियों की बैठकें आयोजित की गई हैं। साथ ही प्रमुख स्थलों, मंडियों और पंजीयन केंद्रों पर योजना से संबंधित जानकारी वाले फ्लेक्स भी लगाए गए हैं।

पोलियो मुक्त भारत बनाए रखने 12 से 14 अक्टूबर तक चलेगा राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जनप्रतिनिधियों, अभिभावकों एवं नागरिकों से अभियान की सफलता के लिए सक्रिय सहयोग की अपील की

24 हजार पोलियो बूथ और 7 हजार टीमें घर-घर जाकर बच्चों को पिलायेंगी दवा, 64 हजार वैक्सीनेटर्स रहेंगे कार्यरत

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि पोलियो मुक्त भारत हमारी सामूहिक जागरूकता और जनसहभागिता का परिणाम है। इसे बनाए रखने के लिये निरंतर सजग रहना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत के कुछ सीमावर्ती राष्ट्रों में अभी भी पोलियो के प्रकरण पाए जा रहे हैं, ऐसे में हमारी सतर्कता ही बच्चों की सुरक्षा है। इसी उद्देश्य से 12 से 14 अक्टूबर 2025 तक प्रदेश के 18 जिलों अनूपपुर, बैतूल, भिंड, भोपाल, छिंदवाड़ा, दतिया, देवास, ग्वालियर, नर्मदापुरम, जबलपुर, कटनी, खंडवा, खरगोन, मंडला, मंदसौर, मुरैना, नरसिंहपुर एवं नीमच - में राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान का अतिरिक्त चरण संचालित किया जा रहा है।

अभियान के दौरान 18 जिलों में 39.19 लाख बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिये 64 हजार वैक्सीनेटर्स कार्यरत रहेंगे। प्रथम दिवस (पोलियो रविवार) को 24 हजार पोलियो बूथ बनाये गये हैं और 7 हजार टीमें घर-घर जाकर बच्चों को दवा पिलाने का कार्य प्रारंभ करेंगी।

दूसरे और तीसरे दिन कुल 31 हजार टीमें घरों का भ्रमण कर छूटे हुए बच्चों को दवा पिलाएंगी। इसके साथ ही प्रदेश के मेला स्थलों, बाजारों, एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, तथा अन्य प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर 1400 ट्रांजिट बूथ स्थापित किए जा रहे हैं। यह सुनिश्चित करने के लिये कि एक भी बच्चा पोलियो दवा से वंचित न रहे, उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों जैसे - ईंट भट्टे, क्रेशर स्थल, निर्माणाधीन क्षेत्र, घुमक्कड़ एवं झुग्गी बस्तियाँ, स्लम, पैरी-अर्बन और दुर्गम वनग्राम - में 500 मोबाइल टीमें सक्रिय रूप से कार्य करेंगी।

गोलियां बरसाकर किया किडनैप, 20 घंटे बाद जंगल में छोड़ा, दो साल पहले था प्रेम-प्रसंग

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के तिघरा थाना क्षेत्र से करीब 15 किलोमीटर दूर गुर्जा गांव से अपहरण कर ले जाई गई रीना उर्फ अंजू गुर्जर को गुरुवार देर शाम को बरामद कर लिया गया। बदमाश उसे लंका के पहाड़ के जंगल में छोड़कर भाग गए।पुलिस को सूचना मिली थी कि महिला यहां जंगल में अकेली बैठी हुई है। सूचना के आधार पर पुलिस मौके पर पहुंची और उसका रेस्क्यू किया। अपहरण हुई गर्भवती महिला रीना के मिलने के बाद उसे इलाज और जांच के लिए कमला राजा हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।अंजू जब पुलिस को मिली तब उसके पैर कांटों से फटे थे। बदमाश योगी अंजू को लगभग 25 किलोमीटर जंगल में पैदल चला चुका था। वह रुक-रुक चल रहे थे, लेकिन जंगल के कांटो पत्थरों से उसके पैर फट गए थे।बता दें कि बुधवार रात को आरोपी योगेंद्र गुर्जर उर्फ योगी करीब 20 साथियों के साथ हथियार लेकर गुर्जा गांव पहुंचा। यहां एक घर में धावा बोल दिया। कुछ लोग घर के अंदर घुसे, बाकी साथी बाहर फायरिंग करते रहे। घरवालों से मारपीट की, फिर गर्भवती महिला रीना का अपहरण कर ले गए थे।

सिक्ख एवं सिंधी समाज की महिलाओं ने करवा चौथ पर पूजा अर्चना की

धार । धार में सिक्ख एवं सिंधी समाज की महिलाओं ने करवा चौथ पर पूजा अर्चना कर पति की लंबी उम्र और सुखमय जीवन की कामना की।

म.प्र. क्रिकेट एसोसिएशन धार जिले के खिलाड़ियों को खेल सुविधा प्रदान करेगा : अमिताभ विजयवर्गीय

धार। म.प्र. क्रिकेट एसोसिएशन के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री महाआर्यन सिंधिया के दिशा निर्देशानुसार क्रिकेट गतिविधियों को बढ़ावा देने और विकास हेतु क्रिकेट डेललपमेंट कमेटी के अध्यक्ष श्री अमिताभ विजयवर्गीय और सदस्य पूर्व रंजी खिलाड़ी दैवेन्द्र परमार ने धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के पदाधिकारियों से मिलकर धार प्रवास के दौरान बैठक कर धार जिला क्रिकेट गतिविधि को लेकर विस्तृत चर्चा की।

इस अवसर पर श्री विजयवर्गीय ने बताया कि म.प्र. क्रिकेट एसोसिएशन आने वाले वर्षों में प्रदेश के कोने-कोने से खिलाड़ियों को तराशने का कार्य करेगा, इस हेतु एक वृहद योजना तैयार की है। जिसमें प्रत्येक जिले के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को जिसको जिसको अन्तर जिला क्रिकेट टूर्नामेन्ट में अच्छा प्रदर्शन होगा उसे रू. 15000/- प्रतिवर्ष बॉयस/गर्ल्स दोनों को सभी आयु वर्ग टूर्नामेन्ट में सीनियर प्रतियोगिता में विजेता/उपविजेता होने पर जिला टीम को रू 30,000/- प्रतिवर्ष इसी प्रकार श्रेष्ठ कोचिंग पर 25,000/- रू. दिया जावेगा, जल्द

ही पंजीकृत खिलाड़ियों का बीमा भी किया जावेगा।

धार जिले की सभी 7 तहसीलों के गांव-गांव में क्रिकेट की गतिविधियों सुचारू संचालन हेतु विस्तृत चर्चा की। श्री विजयवर्गीय ने बताया कि धार जिले के खिलाड़ियों की क्रिकेट किट व बॉल की संख्या बढ़ाने का प्रयास किया जावेगा तथा क्रिकेट कोच धार को भी वार्षिक अनुदान दिया जावेगा। धार में अम्पायर प्रशिक्षण का भी वर्कशॉप आयोजित किया जावेगा।

साथ ही खिलाड़ियों को कई अन्य प्रकार की सुविधाएँ भी मुहैया की जावेगी। इस अवसर जिला क्रिकेट एसोसिएशन के चेयर मैन करणसिंह पंवार, अध्यक्ष प्रदीप जोशी, सचिव राजेन्द्रसिंह चौहान, उपाध्यक्ष प्रमोद फाटक, विनोद मित्तल, धीरेन्द्र दिघे, शैलेन्द्र जोशी, महेन्द्र सुर्वे, प्रमोद शर्मा, राजेश शर्मा उपस्थित थे। बैठक के पूर्व अतिथि को स्वागत अध्यक्ष प्रदीप जोशी (किकाभाई) ने पुष्पगुच्छ भेंटकर किया। पदाधिकारियों ने उदाजी क्रिकेट ग्राउण्ड (एसपीडीए) का अवलोकन भी किया।

उपराष्ट्रपति से केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने सौजन्य भेंट कर समसामयिक विषयों पर चर्चा की

धार। शुक्रवार को संसद भवन, नई दिल्ली में भारत के उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन जी से केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री एवं धार महू लोकसभा क्षेत्र सांसद सावित्री ठाकुर ने सौजन्य भेंट कर विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा की।सावित्री ठाकुर ने ने बताया कि उपराष्ट्रपति जी के व्यापक जनसेवा अनुभव और मार्गदर्शन से आगामी संसद का शीतकालीन सत्र और अधिक प्रेरणादायी एवं सार्थक होगा। जानकारी संजय शर्मा ने दी।

कृषि सखियों के लिए पांच दिवसीय प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

नर्मदापुरम (निप्र)। कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर में परियोजना संचालक आत्मा के तत्वावधान में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना अंतर्गत आयोजित. पाँच दिवसीय प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ। यह प्रशिक्षण विशेष रूप से माखन नगर, नर्मदापुरम, केसला एवं सिवनी मालवा विकासखंडों के चयनित क्लस्टर की कृषि सखियों के लिए आयोजित किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती की वैज्ञानिक तकनीकों, विधियों और प्रबंधन उपायों से परिचित कराना तथा उनके माध्यम से ग्राम स्तर पर प्राकृतिक कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को पाँच दिनों तक विभिन्न विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इनमें मुख्य रूप से प्राकृतिक खेती की अवधारणा एवं सिद्धांत के बारे में विस्तृत जानकारी के बारे में बताया गया, जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत एवं नीमास्त्र जैसे जैविक उत्पादों का निर्माण एवं उपयोग, स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के उपाय, कीट एवं रोग प्रबंधन में जैविक विधियों का प्रयोग, प्राकृतिक खेती उत्पादों के विपणन एवं मूल्य संवर्धन की रणनीतियाँ, प्रशिक्षण के दौरान कृषि सखियों को प्रयोगात्मक तौर पर जैविक घोलों की निर्माण विधि, खेत प्रबंधन के तरीके तथा फसल संरक्षण के लिए प्राकृतिक उपायों का अभ्यास भी कराया गया।

प्रशिक्षण में दो दिवस मनोहर प्राकृतिक खेती फार्म सुहागपुर एवं मुकुंदलीला जैविक फार्म पर प्राकृतिक खेती से जुड़ी जानकारी, ढूस्स्र मॉडल , निर्माण इकाई, फसल विविधीकरण आदि की जानकारी एवं प्राकृतिक उत्पादों की जानकारी दी गई.कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती प्रियंका त्रिपाठी (सहायक संचालक कृषि), श्री गोविंद मीना (उप परियोजना संचालक आत्मा) तथा डॉ. संजीव कुमार गर्ग (प्रभारी, कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर) उपस्थित रहे। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के समय में रासायनिक कृषि के दुष्प्रभावों को देखते हुए प्राकृतिक खेती ही टिकाऊ कृषि का भविष्य है। कृषि सखियाँ इस ज्ञान को गाँव-गाँव तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

इस अवसर पर प्रगतिशील किसान श्री रमेश मेहरा एवं श्री प्रदीप वर्मा ने भी अपने-अपने खेतों में अपनाई गई प्राकृतिक खेती की तकनीकों और उनसे प्राप्त सकारात्मक परिणामों को साझा किया। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती से न केवल उत्पादन लागत में कमी आई है, बल्कि मिट्टी की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

प्रशिक्षण में भाग लेने वाली कृषि सखियों ने भी अपने पाँच दिवसीय प्रशिक्षण अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम से उन्हें नई तकनीकी जानकारी प्राप्त हुई है, जिसे वे अपने गाँवों में अन्य किसानों के बीच प्रचार-प्रसार करेंगी।

कार्यक्रम का मंच संचालन एवं आभार प्रदर्शन प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. राजेंद्र पटेल एवं डॉ. प्रवीण सोलंकी द्वारा किया गया। उन्होंने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण कृषि परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा भाव के अंतर की राशि किसानों को प्रदाय की जाएगी तो हम किसानों का हौंसला बढ़ेगा

विदिशा (निप्र)। भावांतर योजना हम किसानों के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा लियख गया सराहनीय निर्णय है, यह कहना है विदिशा जिले के ग्राम जरोद के किसान श्री राजेंद्र सिंह दांगी का। राजेन्द्र सिंह दांगी ने बताया कि सोयाबीन की फसल लगाने वाले किसानों के हित में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने भावांतर भुगतान योजना प्रारंभ की है। जिससे हम जैसे किसानों के जीवन में एक नई रोशनी आई है। इस योजना से सोयाबीन की फसल के भाव में आने वाले बीच के अंतर को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पूरा किया जाएगा और भाव के अंतर की राशि किसानों को खातों में प्रदाय की जाएगी, जिससे हम किसानों को बहुत मदद मिलेगी। खेती किसानी के कार्यों में हम इस राशि का प्रयोग कर पाएंगे और एक अच्छे किसान के रूप में उभर कर आएंगे। भावांतर योजना के लिए किसान श्री राजेन्द्र सिंह दांगी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और मध्य प्रदेश सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है। किसान श्री राजेन्द्र सिंह दांगी बताते हैं कि सोयाबीन की उपज लेने वाले कृषक बंधु जिनके खेत में सोयाबीन की फसल की पैदावार अच्छी नहीं हुई है, वह जब कृषि उपज मंडी में अपनी फसल विक्रय करने जाएंगे तो भाव के बीच में आने वाले अंतर को मध्य प्रदेश सरकार द्वारा भावांतर भुगतान योजना के माध्यम से पूरा किया जाएगा जो एक सराहनीय पहल है यह योजना गरीब किसानों के लिए वरदान बन रही है।

स्टैंडिंग कमेटी की बैठक संपन्न

रीवा (निप्र)। स्थानीय निकायों की फोटोयुक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण के संबंध में स्टैंडिंग कमेटी की बैठक संपन्न हुई। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी सुधीर कुमार बेक ने मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को स्थानीय निकाय की फोटोयुक्त मतदाता सूची के संबंध में वार्षिक पुनरीक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी गई।

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम: कांक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की तकनीकी समिति बैठक आयोजित

बैतूल (निप्र)। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत कांक्लियर इम्प्लांट सर्जरी की तकनिकी समिति बैठक का आयोजन 8 अक्टूबर को कार्यालय मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य बैतूल में किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि बैठक में एमडी डॉ रोहित पराते, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ सुरेन्द्र कुमार कुशवाहा, नाक कान गला रोग विशेषज्ञ डॉ ऋषि माहोर द्वारा बच्चों का परीक्षण कर सर्जरी के लिये भावेश पिता श्री राजेश प्रजापति 5 वर्ष निवासी आठनेर, अनमोल पिता श्री संदीप उइके 3 वर्ष 7 माह निवासी सोनाली बंडाला आमला, कुमारी याचना पिता श्री अनिल सूर्यवंशी 3 वर्ष 4 माह निवासी रगडगांव प्रभात पट्टन को चिन्हित किया गया। चिन्हित बच्चों को इंदौर के अरविन्दों इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइसेस हॉस्पिटल भेजा जाएगा। बैठक में जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, जिला कार्यक्रम प्रबंधक डॉ विनोद शाक्य एवं आरबीएसके मैनेजर योगेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।

अवैधानिक रूप से अस्पताल संचालित करने पर संचालक के विरुद्ध एफआईआर दर्ज

सीहोर (निप्र)। सीहोर जिले के श्यामपुर विकासखंड के ग्राम बरखेड़ी में अवैधानिक रूप से संचालित मुस्कान अस्पताल के संचालक अशोक विश्वकर्मा के विरूद्ध कोतवाली थाना सीहोर में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। ग्राम बरखेड़ी में अवैधानिक रूप से संचालित इस मुस्कान अस्पताल में 07 अक्टूबर 2025 को हुई दो वर्षीय बच्ची की मृत्यु के प्रकरण में सीएमएचओ डॉ सुधीर कुमार डेहरिया द्वारा 05 सदस्यीय चिकित्सा अधिकारियों की जांच समिति गठित की गई है। समिति को प्रकरण की जांच कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए है। सीएमएचओ डॉ सुधीर कुमार डेहरिया ने बताया कि पूर्व में इस अस्पताल को 12 दिसंबर 2024 को अनेक अनियमितताओं के कारण सील किया जा चुका है, इसके बावजूद भी यह अस्पताल अवैधानिक रूप से संचालित किया जा रहा था। सीएमएचओ ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस अस्पताल को आज पुनः सील कर दिया गया है।

जिला स्तरीय युवा संगम मेला औबेदुल्लागंज में 14 अक्टूबर को

रायसेन (निप्र)। जिले के बेरोजगार युवाओं को रोजगार तथा स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशानुसार दिनांक 14 अक्टूबर 2025 को औबेदुल्लागंज स्थित वीर सावरकर शासकीय महाविद्यालय में जिला स्तरीय युवा संगम मेले का आयोजन किया गया है। जिला रोजगार कार्यालय, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र तथा कौशल विकास विभाग के संयुक्त तत्वधान में आयोजित यह युवा संगम मेला 14 अक्टूबर को प्रातः 11 बजे से अपरान्ह 03 बजे तक आयोजित किया गया है। इस युवा संगम मेले के माध्यम से युवाओं को विभिन्न कम्पनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने के साथ ही शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी दी जाएगी। इस जिला स्तरीय युवा संगम मेले में नवभारत फर्टीलाइजर भोपाल, टेस्ला ट्रांसफामर्स इंडिया लिमिटेड मण्डीदीप, अनंत स्पिनिंग मिल्स मंडीदीप, इंसुलेटर्स एण्ड इलेक्ट्रिकल्स मंडीदीप, आईडब्ल्यूआई स्टेशनरी मण्डीदीप, यश्यवी ग्रुप मण्डीदीप, सागर मेनिफेक्चर तामोट, होम हेल्प सेंटर रायसेन, फोनटी फाउन्डेशन मण्डीदीप, आर सेठी रायसेन, वोल्वो आयसर बगरोदा, टाटा मोटर्स अहमदावाद द्वारा विभिन्न पदों पर भर्ती की जाएगी। इसके लिए अनिवार्य योग्यता पदानुसार कक्षा 8वीं, 10वीं, 12वीं, स्नातक, आईटीआई, डिप्लोमा इंजीनियरिंग एवं डिग्री इंजीनियरिंग है। आयु सीमा 18 वर्ष से 35 वर्ष निर्धारित है। इस अवसर पर ऐसे अभ्यर्थी जो स्वयं का स्वरोजगार स्थापित करना चाहते हैं उन्हें विभिन्न स्वरोजगारमूलक विभागों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा और शासन की ओर से दी जाने वाली सहायता एवं योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी।

दिव्यांग को बीपीएल कार्ड जारी हुआ

विदिशा (निप्र)। बासौदा की ग्राम पंचायत रसूलपुर में शिविर का आयोजन किया गया था। मौके पर प्राप्त अनेक आवेदनो का निराकरण जनपद सीईओ तपस्या जैन के द्वारा निराकरण कराया गया है। उन्होंने बताया कि शिविर में ग्राम के हीरालाल पिता मुंशीलाल वाल्मीकी जो दिव्यांग श्रेणी में शामिल है। आवेदक को आंखो से दिखाई नहीं देता है आवेदन को संज्ञान में लेते हुए त्योंदा तहसीलदार के माध्यम से बीपीएल सूची में दर्ज कराने का कार्य कराया गया और आवेदक को पात्रतानुसार राशन की प्राप्ति हो के प्रबंध सुनिश्चित किए गए है। जनपद सीईओ श्रीमती जैन ने बताया कि दिव्यांग आवेदक हीरालाल वाल्मीकी के आंखो का इलाज जिला चिकित्सालय में संभव हो इसके लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है।

राज्यसभा सांसद माया नारोलिया ने ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल की माताजी के निधन पर गोटेगांव पहुंचकर दी श्रद्धांजलि

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल की माताजी स्व. श्रीमती यशोदा बाई पटेल जी के देवलोकगमन के उपरांत राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया बुधवार को श्रीधाम गोटेगांव स्थित उनके निवास पहुंचीं। उन्होंने दिवंगत आत्मा के छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी तथा शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट की।

इस अवसर पर श्रीमती नारोलिया ने कहा कि मां का साया जीवन से उठ जाना हृदय में ऐसी शून्यता छोड़ जाता है, जिसे कोई शब्द भर नहीं सकते। मातृस्नेह का अनुपम आशीर्वाद, ममता और करुणा सदा अमर रहती है। स्व. यशोदा बाई पटेल की स्मृतियां सदैव प्रेरणा स्रोत बनी रहेंगी। उन्होंने परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि वे दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा परिवारजनों को इस गहन शोक को सहन करने की शक्ति और धैर्य दें। इस अवसर पर श्रीमती नारोलिया के साथ सोहागपुर विधायक श्री ठाकुर विजयपाल सिंह, पिपरिया विधायक श्री ठाकुरदास नागवंशी, श्री निखिलेश चतुर्वेदी, श्री अश्विनी सरोज, श्री विपिन यादव, श्री आकाश रघुवंशी, श्री आकाश तिवारी, पूर्व विधायक श्रीमती सविता दीवान शर्मा, श्रीमती रंजना मीना, जनपद अध्यक्ष श्रीमती सावित्री बाई परनामे, जनपद उपाध्यक्ष श्री लालचंद यादव, श्री हंस राय, श्री अनिल बुंदेला, श्री संजय अग्रवाल, श्री सुरेश यादव, श्री राजा गुजर पटेल, श्री बलराम ठाकुर, श्री प्रशांत पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधीगण उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने ग्राम रातामाटी में स्वास्थ्य शिविर लगा किया उपचार

हरदा (निप्र)। जिले के टिमरनी विकासखण्ड के वनग्राम रातामाटी एवं बिटिया में मौसमी बीमारियों के प्रकोप संबंधी सूचना प्राप्त होने पर 7 एवं 8 अक्टूबर को मेडिकल टीम द्वारा ग्रामों में पहुंचकर स्थानीय निवासियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उपचार प्रदान किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच.पी. सिंह ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग की टीम में डॉ. योगेश अग्रवाल, आर.बी.एस. के. चिकित्सक, स्थानीय ए.एन.एम. श्रीमती रोशनी खरे एवं सी.एच.ओ. श्री संदीप जांगडे व आशा सहयोगी एवं आशा कार्यकर्ता सम्मिलित थे। शिविर में डॉ. योगेश अग्रवाल द्वारा ग्राम रातामाटी में दो मृत्यु होना सत्यापित किया गया है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एच.पी. सिंह ने बताया कि 1 अक्टूबर को श्री वंशीलाल पिता श्यामलाल कोरकू उम्र 38 वर्ष निवासी ग्राम रातामाटी का पेट दर्द होने के कारण जिला चिकित्सालय हरदा में भर्ती किया गया था। जहाँ उसके सी.टी. स्कैन की रिपोर्ट में पैरीटोनाईटिस विथ न्यूमोपैरीटोनियम लीड्स टू सेप्टीसिमिया होना पाया गया था।

इसके बाद गंभीर स्थिति होने पर उसे हमीदिया चिकित्सालय, भोपाल के लिये एम्बुलेंस से रैफर किया गया था, किन्तु परिजनों के अनुसार उसकी रास्ते में ही मृत्यु हो गई थी। इसी प्रकार 7 अक्टूबर को श्रीमती जुनई पत्नि सीताराम कोरकू उम्र 45 वर्ष निवासी ग्राम रातामाटी की खण्डवा के चिकित्सालय में मृत्यु की सूचना ग्राम में उसी समय प्राप्त हुई थी। इस महिला को एक दिन पूर्व 6 अक्टूबर की रात्रि को घबराहट, सीने में दर्द व उल्टी की शिकायत, जिसे ग्रामवासी गैस बढना बता रहे है, के बाद परिजन उसे रात्रि में उसे खण्डवा ले गये, जहाँ चिकित्सालय में उपचार दौरान 7 अक्टूबर की दोपहर में उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु का संभावित कारण हृदयघात (हार्टअटैक) है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सिंह ने बताया कि ग्राम रातामाटी में चिकित्सा दल द्वारा 7 अक्टूबर को कुल 47 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया एवं 8 अक्टूबर को कुल 52 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया, जिसमें एक मरीज को संभावित पीलिया होना पाया गया, शेष मरीज मौसमी बीमारियों जैसे सर्दी, खांसी, बदन दर्द आदि से पीड़ित पाये गये जिन्हें परीक्षण के बाद उपचार दिया गया। संभावित पीलिया के मरीज का रक्त नमूना परीक्षण हेतु लाया गया है। ग्राम में सभी प्रतिबंधात्मक कार्यवाही जिसमें जल शुद्धीकरण व क्लोरीन टेबलेट वितरण का कार्य किया गया है। आशा कार्यकर्ता के पास पर्याप्त दवा, रखी गई है। वर्तमान में ग्राम में किसी भी तरह की महामारी अथवा संक्रामक रोग का प्रकोप नहीं है। इसी तरह ग्राम बिटिया में दल द्वारा 4 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जो कि सामान्य मौसमी बीमारियों से पीड़ित थे। वहाँ किसी भी तरह की संक्रामक बीमारी का प्रकोप नहीं पाया गया। स्वास्थ्य दल ग्राम रातामाटी एवं बिटीया में ग्रामीण के स्वास्थ्य जॉच हेतु निरंतर भेजा जा रहा। वर्तमान में ग्राम में किसी भी तरह की महामारी अथवा संक्रामक रोग का प्रकोप नहीं है।

पिपरिया में चल रहे सांसद मेले में केंद्रीय संचार ब्यूरो, भोपाल की चित्र प्रदर्शनी बनी आकर्षण का केंद्र

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम ज़िले के पिपरिया के मंडी प्रांगण में 05 अक्टूबर से प्रारंभ हुए सांसद मेले में केंद्र सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत आने वाले केंद्रीय संचार ब्यूरो, भोपाल द्वारा लगाई गई चित्र प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। रविवार को इस चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन लोक निर्माण मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह, सांसद श्री चौधरी दर्शन सिंह और राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया और अन्य गणमान्य नागरिकों द्वारा किया गया था। चित्र प्रदर्शनी में ऑपरेशन सिंदूर, जीएसटी में हाल ही में किए गए सुधारों, पोषण माह, स्वच्छता, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के 11 वर्ष और विकसित भारत पर विस्तार से जानकारी दी गई है। प्रदर्शनी का प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग अवलोकन कर रहे हैं और इसमें दी गई जानकारी का लाभ उठा रहे हैं। प्रदर्शनी में स्वच्छता पर आधारित एक सेल्फी बूथ भी लगाया गया है जो लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। प्रदर्शनी में तीन दिन गीत एवं नाटक पर भाग के पंजीकृत दलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं.

हरदा जिले मे मेडिकल स्टोर्स का किया निरीक्षण

हरदा (निप्र)। छिंदवाडा जिले में घटित घटना जिसमें खॉसी की दवाई काफड्रिल से मृत्यु होने की शिकायत पर कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देशानुसार हरदा जिले में औषधि विक्रेताओं की जॉच मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एच. पी. सिंह एवं ड्रग इंस्पेक्टर श्री संजीव जादौन द्वारा की गई। इस दौरान प्रतिबंधित औषधि एवं श्रीसन फार्मा तमिलनाडू के अन्य औषधि उत्पाद की हरदा जिले में अनुपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए औषधि विक्रेताओं के यहॉ निरिक्षण किया गया तथा सर्दी खॉसी के कफ सीरप के नमूने लिए गये। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एच पी सिंह के निर्देश पर बच्चों के चिकित्सक के आस पास के सभी औषधि विक्रेताओं का निरीक्षण प्राथमिकता पर किया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सिंह ने बताया कि बुधवार को हरदा के माधूरी मेडिकल स्टोर, बालाजी मेडिकोज, दीपक मेडिकोज, सोमानी मेडिकल स्टोर, तृप्ती मेडिकल स्टोर, न्यू हरि मेडिकल स्टोर, कुमार मेडिकल स्टोर हरदा का निरीक्षण किया गया, जहॉ से कफ सीरफ के सेम्पल भी जॉच हेतु लिए गये। जिले में संबंधित कंपनी का कोई भी स्टॉक नही पाया गया है। जिले मे मेडिकल स्टोर्स का निरीक्षण निरंतर किया जावेगा।

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल और विधायक हेमंत खंडेलवाल ने आमला में पीड़ित परिवारों से की मुलाकात

परिजनों को दी सांत्वना - कहा, संकट की घड़ी में शासन-प्रशासन आपके साथ

बैतूल (निप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल एवं बैतूल विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने बुधवार को बैतूल जिले के आमला विकासखंड में दिवंगत बच्चों के परिजनों से मुलाकात कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। इस दौरान आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे और श्री सुधाकर पवार भी साथ रहे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सबसे पहले ग्राम टीकाबरई पहुंचकर नागपुर एम्स में उपचाररत हर्ष यादव के परिजनों से भेंट की और उन्हें आश्वस्त किया कि मध्यप्रदेश शासन हर संभव सहायता के लिए उनके साथ खड़ा है। उन्होंने एम्स नागपुर में भर्ती हर्ष के उपचार की जानकारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से ली तथा परिजनों और एम्स की टीम से सतत संपर्क में रहकर आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके बाद वे ग्राम जामुन बिछुआ पहुंचे, जहाँ पीड़ित परिवार के सदस्य निकलेश धुर्वे के घर जाकर उन्होंने परिजनों को ढांढस बंधाया। तत्पश्चात ग्राम कमलेश्वरा में भी उप मुख्यमंत्री ने प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि शासन द्वारा दी जाने वाली चार लाख रुपये की आर्थिक सहायता के अतिरिक्त उपचार में हुए संपूर्ण व्यय का भुगतान शीघ्र किया जाए। उन्होंने एसडीएम श्री शैलेंद्र बडोनिया को निर्देशित किया कि आर्थिक सहायता की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की कठिनाई न आए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि पीड़ा की इस घड़ी में मध्यप्रदेश सरकार प्रत्येक प्रभावित परिवार के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रभावित परिवारों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे।

सीएम मोहन यादव ने महाराष्ट्र के उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश में दिया निवेश का न्योता

बोले- राज्य में तेजी से बढ़ रहा है निवेश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में उद्योगों की स्थापना के लिए व्यवस्थाओं को सरल बनाया गया है। प्रदेश में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के तहत इस वर्ष सम्पन्न ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, भोपाल के दौरान 18 नई नीतियां लागू की गईं। सरलीकृत की गई व्यवस्थाओं के कारण मध्यप्रदेश में तेज गति से निवेश आ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाराष्ट्र के उद्यमियों से मध्यप्रदेश में निवेश का अनुरोध करते हुए कहा कि प्रगति के क्षेत्र में महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश जोड़ीदार राज्य हैं। अतीत के गौरवशाली पृष्ठ को देखें तो महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश का गहरा संबंध रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मुम्बई में इंटरएक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट ऑपर्च्युनिटीज इन पॉवर एंड रिन्यूएबल एनर्जी इक्विपमेंट मैन्युफैक्चरिंग एंड वाइट गुड्स इन मध्यप्रदेश को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि व्यापारियों को नई पॉलिसियों का लाभ दिया जा रहा है। बिजनेस और निवेश को लेकर निरंतर सीसीआई की बैठकें आयोजित की जाती हैं। प्रदेश में संभागीय स्तर पर इंडस्ट्री कॉन्क्लेव आयोजित कर छोटे शहरों को इंडस्ट्री से जोड़ा गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि आज इस सत्र के माध्यम से रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में 19,900 करोड़ रूपए से अधिक के निवेश एवं अन्य सभी सेक्टर्स में 54,400 करोड़ रूपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार

कुल 74,300 करोड़ रूपये से अधिक के निवेश प्राप्त हुए हैं। कार्यक्रम में सन फार्मा के अध्यक्ष दिलीप सांघवी, सीआईआई के अध्यक्ष नील सी. रहेजा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी), ईसीजीसी सृष्टिराज अम्बष्ठ, हिंडाल्को के प्रबंध निदेशक सतीश पाई, हेत्तिच के प्रबंध निदेशक आंद्रे एकहोल्ट, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य वित्तीय अधिकारी (एमडी एवं सीएफओ), आईपीसीए लैब अजीत कुमार जैन और एफआईईओ के उपाध्यक्ष रविकांत कपूर विशेष रूप से मौजूद थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शिवाजी महाराज और प्रदेश के सिंधिया, होल्कर, पवार इतिहास के उस दौर में भारतीय समाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका में रहे। उज्जैन में बाबा महाकाल की ध्वजा जिस शान से लहराती है, उसके अतीत में शिवाजी महाराज का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आशा व्यक्त की कि मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के मध्य उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में संबंध अधिक सशक्त होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज मुंबई में इन्टरेक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्टमेंट ऑपर्च्यूनिटीज इन मध्यप्रदेश कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। भारत की आर्थिक राजधानी में उद्योग जगत के दिग्गजों के साथ हमारा यह संवाद सत्र अत्यंत सकारात्मक और परिणामोन्मुखी रही। महाराष्ट्र की औद्योगिक विशेषज्ञता और मध्यप्रदेश की 'अनंत संभावनाएं' मिलकर देश की प्रगति को नई गति देंगे। हमारा लक्ष्य महाराष्ट्र के निवेशकों को मध्यप्रदेश की विकास यात्रा में एक रणनीतिक भागीदार के रूप में जोड़ना है।

निवेश प्रस्ताव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि इस सत्र के माध्यम से रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में 19,900 करोड़ रूपए से अधिक के निवेश एवं अन्य सभी सेक्टर्स में 54,400 करोड़ रूपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार कुल 74,300 करोड़ रूपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं एवं जिनके माध्यम से लगभग 7000 से अधिक रोजगार सृजित होंने की संभावना है। इन प्रस्तावों को धरातल पर उतारने हेतु हम हर संभव प्रयास करेंगे, ताकि प्रदेश में पूंजी निवेश बढ़े और हमारे युवाओं के लिए नए रोजगार के अवसर सृजित हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मुंबई, सपनों का शहर है जो अपनी ऊर्जा और उद्यमशीलता के लिए जाना जाता है। आज मध्यप्रदेश की विकास आकांक्षाओं का साक्षी बन रहा है। यह संवाद केवल व्यापार का नहीं, बल्कि महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के बीच एक नई, अटूट औद्योगिक साझेदारी की शुरुआत है। हमें मुंबई के निवेशकों से जो उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है, वह हमारी उम्मीदों से बढ़कर है। कई प्रमुख औद्योगिक घरानों ने मध्यप्रदेश में निवेश करने में गहरी रुचि दिखाई, जो हमारी नीतियों पर उनके विश्वास का प्रमाण है।

संघ प्रचारक से मारपीट, उपद्रव करने वाले 5 आरोपी गिरफ्तार

बैतूल के मुलताई में 30 पर केस दर्ज, दो एसआई निलंबित, टीआई लाइन अटैच

मुलताई (नप्र)। मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के मुलताई में गुरुवार शाम को दो समुदायों के बीच हुए हंगामे के मामले में 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। कुल 30 लोगों पर केस दर्ज हुआ है। बैतूल एसपी वीरेंद्र जैन ने

लापरवाही बरतने को लेकर देर रात दो सब इंस्पेक्टर निलंबित कर दिया है। वहीं, थाना प्रभारी को पहले ही लाइन अटैच कर दिया गया था।

शहर में धारा 163 (144) लगाई गई है। आज सुबह मस्जिद से ऐलान किया गया कि लोग दो-दो करके जुमे की नमाज के लिए आए। भीड़ न लगाएं।

दरअसल, मुलताई में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के जिला प्रचारक शिशुपाल यादव के साथ कुछ लोगों ने मारपीट कर दी थी। इसके बाद हंगामा मच गया। दो समुदाय के लोग सड़क पर आमने-सामने आ गए। दोनों पक्षों जमकर मारपीट हो गई। पुलिस ने दोनों पक्षों को अलग कर मामला शांत कराया। शुक्रवार सुबह शहर में हर चौक-चौराहे पर पुलिसकर्मी नजर आ रहे हैं।

रात में थाने का घेराव किया- रात में आरएसएस प्रचारक से मारपीट के विरोध में लोगों ने थाने का घेराव कर दिया। जिन युवकों ने जिला प्रचारक के साथ मारपीट की, उनके घरों के सामने भी लोग जमा हो गए। प्रदर्शनकारी आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े रहे।

आकाशवाणी द्वारा युवाओं के लिए तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

भोपाल। आकाशवाणी के 90वें प्रसारण वर्ष पर आकाशवाणी भोपाल द्वारा सैम कॉलेज में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इस अवसर पर अपने आरंभिक उद्बोधन में प्रसारण-अधिकारी श्री मनीष गजभिये ने युवाओं को आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्ता बताई। इसी अवसर पर आकाशवाणी ने उक्त कॉलेज में एक दिन का आरजे बनने के लिए प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें कॉलेज के प्रतिभागी छात्र-छात्राओं में से छात्रा कस्तुरी कुमारी ने बाज़ी मारी। इसके साथ ही कस्तुरी को आकाशवाणी के युववाणी कार्यक्रम में एक दिन का आरजे बनने का मौक़ा मिला। आकाशवाणी द्वारा शहर के अलग-अलग महाविद्यालयों में समय-समय पर इस तरह का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आकाशवाणी के प्रसारण-अधिकारी विक्रम कुमार रंजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की सराहना करते हुए कार्यक्रम प्रमुख राजेश भट ने कहा कि आकाशवाणी सदैव समाज के सभी वर्गों, विशेषकर युवाओं को सकारात्मक सोच, भारतीय मूल्यों और सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का कार्य कर रही है। ऐसी प्रतियोगिताएँ न केवल प्रतिभा को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि युवाओं को मीडिया के माध्यम से अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान करती हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने करवा चौथ पर्व की शुभकामनाएं दीं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने करवा चौथ के पावन पर्व पर प्रदेश की सभी माताओं एवं बहनों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि परमपिता परेश्वर से प्रार्थना है कि करवा चौथ पर्व सभी के जीवन में प्रेम, विश्वास और अखंड सौभाग्य लेकर आए। प्रदेश में सुख, समृद्धि एवं आरोग्यता का दीप सदा प्रज्जवलित होता रहे।

1.45 करोड़ रुपये की लूटकांड में बड़ी कार्रवाई

सिवनी एसडीपीओ पूजा पांडे निलंबित, नौ पुलिसकर्मी पहले ही सस्पेंड

भोपाल/सिवनी (नप्र)। चैकिंग के दौरान जीप वाहन से 1.45 करोड़ रुपये की लूट करने संबंधी संगीन आरोपों व विधिवत जब्ती ना बनाकर संदिग्ध आचरण में लिप्त नौ पुलिस अधिकारी-कर्मचारियों के निलंबन के बाद 10 अक्टूबर को डीजीपी कैलाश मकवाना ने आदेश कर सिवनी एसडीओपी पूजा पांडे को निलंबित कर दिया है।

निलंबित एसडीओपी को पुलिस मुख्यालय भोपाल अटैच किया गया है। 9 अक्टूबर की रात जबलपुर रेंज आईजी प्रमोद वर्मा ने चैकिंग दल में शामिल बंडोल थाना प्रभारी व उपनिरीक्षक अर्पित भैरम सहित नौ पुलिस कर्मचारियों को निलंबित किया था। वहीं, चैकिंग दल का नेतृत्व कर रही एसडीओपी (सीएसपी) पूजा पांडे के खिलाफ कार्रवाई का प्रस्ताव पुलिस मुख्यालय भोपाल भेजा गया है।

पुलिस अधीक्षक सुनील कुमार मेहता ने बताया कि वाहन से जब्त 1.45 करोड़ रुपये की रकम किसकी है, इसकी जांच की जा रही है। फरियादी ने अपनी शिकायत में 2 करोड़ 96 लाख 50 हजार

रुपये की रकम होने का उल्लेख किया है।

प्रकरण में विस्तृत जांच की जा रही है। प्रकरण की निष्पक्ष जांच करने जबलपुर रेंज आइजी ने जबलपुर एएसपी आयुष गुप्ता को सिवनी भेजा है, जिन्हें तीन दिनों में पूरे घटनाक्रम की विस्तृत रिपोर्ट सौंपने कहा गया है।

वरिष्ठ अधिकारियों को नहीं दी जब्ती की सूचना

जानकारी के अनुसार जब्त रकम महाराष्ट्र जालना के एक सोना-चांदी व्यापारी सोहनलाल परमार की बताई जा रही है। रकम को जीप में सवार ड्रायवर व अन्य एक 8 अक्टूबर की रात कटनी से जालना लेकर जा रहा था। सीएसपी पूजा पांडे के नेतृत्व में सीलादेही फोरलेन में बुधवार रात चैकिंग के दौरान वाहन जीप को रोका गया। सूत्रों के अनुसार, तलाशी के दौरान वाहन में निलंबित पुलिस कर्मचारियों को बड़ी रकम मिली। कथित रूप से ड्रायवर व उसके सहयोगी से मारपीट कर भगा दिया गया।